३१. और तुम में से जो कोई भी अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करेगी और नेक काम करेगी हम उसे दोगुना बदला देंगे, और उस के लिए हम ने बेहतरीन रोज़ी (जीविका) तैयार कर रखी है।

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿31﴾

३२. हे नबी की बीवियो! तुम आम औरतों की तरह नहीं हो,[1] अगर तुम परहेज़गारी बरतो तो नर्म लहजे से बात न करो कि जिस के दिल में रोग हो वह कोई बुरा इरादा करे, लेकिन क़ायदे के मुताबिक़ बात करो।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿32﴾

३३. और अपने घरों में क़रार से रहो,[2] और पहले की जाहीलियत के ज़माने की तरह अपने श्रृंगार (सौंदर्य) का इज़हार न करो, और नमाज़ क़ायम करती रहो और ज़कात देती रहो और अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म की पैरवी करो, अल्लाह (तआला) यही चाहता है कि हे नबी की घरवालियो[3] तुम से वह हर

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿33﴾



---

[1] यानी तुम्हारी हालत और मुक़ाम आम औरतों की तरह नहीं हैं बल्कि अल्लाह ने तुम्हें रसूल ﷺ की पत्नी होने की जो ख़ुशनसीबी अता की है, उस के सबब तुम्हें ख़ास मुक़ाम हासिल है और रसूलुल्लाह ﷺ की तरह तुम्हें भी मुसलमानों के लिए नमूना बनना है, इसलिए उन्हें उन के मुक़ाम और पद से बाख़बर करके उन्हें कुछ अहकाम (निर्देश) दिये जा रहे हैं, इस से सम्बोधित (मुख़ातिब) अगरचे पाक बीवियाँ हैं, जिन्हें ईमानवालों की माताएं कहा गया है लेकिन शैली (जुमले) के अनुसार साफ़ ज़ाहिर है कि मक़सद सभी मुसलमानों की औरतों को समझाना और चेतावनी (आगाही) देना है, इसलिए यह निर्देश सभी मुसलमान औरतों के लिए है।

[2] यानी टिक कर रहो और बिला सबब घर से बाहर न निकलो, इस में वाज़ेह कर दिया कि औरत के काम का दायरा सियासत और हुकूमत नहीं, आर्थिक (मआशी) झमेले भी नहीं बल्कि घर के अन्दर रहकर गृहस्थी के काम पूरा करना है।

[3] अहले बैत से मुराद कौन हैं? इस बारे में कुछ इख़्तिलाफ़ है, कुछ ने पाक बीवियाँ मुराद लिया है, जैसाकि यहाँ क़ुरआन करीम के लफ़्ज़ों से वाज़ेह हो रहा है, क़ुरआन ने यहाँ पाक बीवियों को ही अहले बैत कहा है। क़ुरआन के दूसरे मुक़ाम पर भी बीवी को अहले बैत कहा है, जैसे सूर: हूद आयत नं॰ ७३ में, इसलिए पाक बीवियों का अहले बैत होना क़ुरआन के लफ़्ज़ों से वाज़ेह है। कुछ लोग, कुछ क़ौल के बिना पर अहले बैत का सम्बन्ध (तआल्लुक़) केवल हज़रत

(तरह की) नापाकी को दूर कर दे और तुम्हें बहुत पाक कर दे।

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ﴿34﴾

३४. और तुम्हारे घरों में अल्लाह (तआला) की जो आयतें और रसूल की हदीसें पढ़ी जाती हैं उन को याद करती रहो,[1] बेशक अल्लाह (तआला) लतीफ़ बाख़बर हैं।

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿35﴾

३५. बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें, इताअत (आज्ञापालन) करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें, सच्चे मर्द और सच्ची औरतें, सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, विनती करने वाले मर्द और विनती करने वाली औरतें, दान (सदक़ा) करने वाले मर्द और दान करने वाली औरतें, रोज़े (व्रत) रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, और बहुत ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करने वाले और करने

---

अली, हज़रत फ़ातिमा और हज़रत हसन और हुसैन से मानते हैं और पाक बीवियों को इस से अलग समझते हैं, जबकि पहले लोग इन चार सहचरों (सहाबा) को इस से अलग समझते हैं जबकि दरमियानी रास्ता और संतुलित (मुनासिब) बात यह है कि दोनों ही अहले बैत हैं। पाक बीवियाँ तो पाक क़ुरआन के इन लफ़्ज़ों के सबब और दामाद और औलाद उन क़ौल के बिना पर जो सहीह हदीस से साबित हैं, जिन में नबी ﷺ ने उनको अपनी चादर में लेकर फ़रमाया कि हे अल्लाह! ये मेरे अहले बैत हैं, जिसका मतलब यह होगा कि यह भी मेरे अहले बैत से हैं या यह दुआ है कि हे अल्लाह इन्हें भी पाक बीवियों की तरह मेरे अहले बैत में शामिल कर ले। इस तरह सभी दलीलों और सुबूतों में मुवाफ़िक़त हो जाती है। (और जानकारी के लिए देखिए फ़तहुल क़दीर शौकानी)

[1] यानी इन के ऐतबार से अमल करो। हिक्मः से मुराद हदीस हैं, इस आयत से दलील देते हुए ज्ञानियों (आलिमों) ने कहा है कि हदीस भी क़ुरआन की तरह नेकी के इरादे से पढ़ी जा सकती है, इस के सिवाय यह आयत पाक बीवियों के अहले बैत होने को साबित करती है, इसलिए कि वह्यी का नुज़ूल जिसकी चर्चा इस आयत में है पाक बीवियों के घरों में ही होता था, ख़ास तौर से हज़रत आयेशा के घर में, जैसाकि हदीस में है।

वालियाँ, इन सब के लिए अल्लाह (तआला) ने बड़ी मग़फ़िरत और बड़ा अज्र (पुण्य) तैयार कर रखा है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَن يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۗ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا ﴿36﴾

३६. और (देखो) किसी मुसलमान मर्द और औरत को अल्लाह और उस के रसूल के फ़ैसले के बाद अपनी किसी बात का कोई हक़ बाक़ी नहीं रह जाता।[1] (याद रखो!) अल्लाह (तआला) और उस के रसूल की जो भी नाफ़रमानी करेगा वह खुली गुमराही में पड़ेगा।

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَاهُ ۖ فَلَمَّا قَضَى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿37﴾

३७. और (याद करो) जबकि तू उस इंसान से कह रहा था जिस पर अल्लाह ने भी नेमत किया और तूने भी कि तू अपनी पत्नी को अपने पास रख और अल्लाह से डर, और तू अपने दिल में वह बात छिपाये हुए था जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और तू लोगों से डर खाता था, हालांकि अल्लाह (तआला) इस का ज़्यादा हक़दार था कि तू उस से डरे, तो जबकि ज़ैद ने उस औरत से अपनी ज़रूरत पूरी कर ली, हम ने उसे तेरे विवाह में दे दिया ताकि मुसलमानों पर अपने लेपालकों की बीवियों के बारे में किसी

[1] यह आयत हज़रत ज़ैनब के विवाह के बारे में नाज़िल हुई थी। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा असल में अरब थे, लेकिन किसी ने उन्हें बचपन में ही पकड़ कर ग़ुलाम (दास) बनाकर बेच दिया था। नबी ﷺ से हज़रत ख़दीजा के विवाह (शादी) के बाद हज़रत ख़दीजा ने उन्हें ख़रीद कर रसूलुल्लाह ﷺ को तोहफ़ा के तौर पर दिया था, आप ﷺ ने उन्हें आज़ाद करके अपना पुत्र बना लिया था। नबी ﷺ ने उनके विवाह का मुआमला अपनी फूफी की पुत्री हज़रत ज़ैनब के साथ रखा था, जिस पर उन्हें और उन के भाई को अपने ख़ानदानी इज़्ज़त के बिना पर संकोच (तरद्दुद) हुआ कि ज़ैद एक आज़ाद किये हुए ग़ुलाम हैं और उनका रिश्ता एक ऊँचे इज़्ज़तदार घराने से है। इस पर यह आयत नाज़िल हुई, जिसका मतलब यह है कि अल्लाह और रसूल ﷺ के फ़ैसले के बाद किसी ईमानवाले मर्द और औरत को यह हक़ नहीं कि वह अपने हक़ का इस्तेमाल करे बल्कि उस के लिये यह है कि वह अपनी स्वीकृति (रज़ामंदी) दे दे, इसलिए इस आयत को सुनने के बाद हज़रत ज़ैनब वग़ैरह ने अपने इरादों पर हठ (ज़िद) नहीं किया और उनका विवाह हो गया।

तरह का संकोच (तरद्दुद) न रहे, जबकि वह अपनी ज़रूरत उन से पूरी कर लें,[1] अल्लाह का (यह) आदेश होकर ही रहने वाला था।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُۥ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَّقْدُورًا (38)

३८. जो चीज़ें अल्लाह (तआला) ने अपने नबी के लिए जायेज़ (मान्य) की हैं, उन में नबी पर कोई हर्ज नहीं। (यही) अल्लाह का क़ानून उन में भी रहा जो पहले हुए और अल्लाह (तआला) के काम अंदाज़े से निर्धारित (मुक़र्रर) किये हुए हैं।

الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُۥ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا (39)

३९. ये सब ऐसे थे कि अल्लाह (तआला) के आदेश (अहकाम) पहुँचाया करते थे और अल्लाह ही से डरते थे और अल्लाह के सिवाय किसी से भी नहीं डरते थे, और अल्लाह (तआला) हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।

مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا (40)

४०. (लोगो), तुम्हारे मर्दों में से किसी के पिता मोहम्मद (ﷺ) नहीं,[2] लेकिन आप अल्लाह (तआला) के रसूल हैं और सारे नबियों में आख़िरी हैं,[3] और अल्लाह (तआला) हर चीज़ को



---

[1] यह हज़रत ज़ैनब से नबी ﷺ के विवाह की वजह है कि भविष्य (मुस्तक़बिल) में कोई मुसलमान इस बारे में संकोच का एहसास न करे और ज़रूरत पड़ने पर गोद लिये पुत्र की तलाक़ दी हुई बीवी से विवाह किया जा सके।

[2] इसलिए वह ज़ैद बिन हारिसा के भी पिता नहीं हैं, जिस पर उन्हें निन्दा (मज़म्मत) का निशाना बनाया जा सके कि उन्होंने अपनी बहू से विवाह क्यों कर लिया ? बल्कि एक ज़ैद ही क्या वह किसी भी मर्द के पिता नहीं हैं, क्योंकि ज़ैद तो हारिसा के पुत्र थे, आप ﷺ ने तो उन्हें मुँह बोला पुत्र बना रखा था और जाहिलियत के रिवाज के अनुसार उन्हें ज़ैद बिन मोहम्मद कहा जाता था। हक़ीक़त में वह आप ﷺ के सगे पुत्र नहीं थे। इसीलिए (ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ) के नाज़िल होने के बाद उन्हें ज़ैद पुत्र हारिसा ही कहा जाता था, इसके सिवाय हज़रत ख़दीजा رضي الله عنها से आप ﷺ के दो पुत्र क़ासिम और अब्दुल्लाह हुए और एक इब्राहीम मारिया क़िब्तिया के पेट से हुए। लेकिन ये सभी बचपन में ही मर गये, उन में से कोई भी पूरी जवानी को नहीं पहुँचा, इस बिना पर आप ﷺ की अपनी औलाद में कोई भी मर्द नहीं रहा जिस के आप ﷺ पिता हों। (इब्ने कसीर)

[3] خَاتَمٌ अरबी ज़ुबान में मोहर (मुद्रा) को कहते हैं और मोहर आख़िरी काम को कहा जाता है आप ﷺ पर नबूअत और रिसालत का ख़ात्मा हो गया, आप ﷺ के बाद जो भी नबूअत या रिसालत का दावा करेगा वह झूठा और दज्जाल होगा। हदीसों में इस बारे में तफ़सील से बयान किया गया है और इस पर सारी उम्मत राज़ी है। क़यामत के क़रीब हज़रत ईसा धरती पर आयेंगे

अच्छी तरह जानने वाला है।

४१. हे मुसलमानो! अल्लाह तआला का जिक्र बहुत ज़्यादा करो।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا (41)

४२. और सुबह-शाम उसकी पकीजगी का बयान करो।

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا (42)

४३. वही है जो तुम पर अपनी रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते (तुम्हारे लिए दया की दुआ करते हैं) ताकि वह तुम्हें अंधेरे से नूर की तरफ़ ले जाये, और अल्लाह (तआला) मुसलमानों पर बड़ा रहम करने वाला है।

هُوَ ٱلَّذِى يُصَلِّى عَلَيْكُمْ وَمَلَٰٓئِكَتُهُۥ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ ۚ وَكَانَ بِٱلْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا (43)

४४. जिस दिन ये अल्लाह (तआला) से मिलेंगे उनका स्वागत (इस्तेक़बाल) सलाम से होगा,[1] उन के लिए अल्लाह (तआला) ने बाइज़्ज़त बदला तैयार कर रखा है।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُۥ سَلَٰمٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا (44)

४५. हे नबी! हक़ीक़त में हम ने ही आप को (रसूल) गवाह, ख़ुशख़बरी देने वाला और बाख़बर करने वाला बनाकर भेजा है।[2]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ إِنَّآ أَرْسَلْنَٰكَ شَٰهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا (45)

४६. और अल्लाह के हुक्म से उसकी तरफ़ बुलाने वाला और रौशन चिराग़।[3]

وَدَاعِيًا إِلَى ٱللَّهِ بِإِذْنِهِۦ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا (46)

---

जो सही और निरन्तर (मुसल्सल) हदीस से साबित है, वह नबी के रूप में नहीं आयेंगे बल्कि नबी ﷺ के पैरोकार बनकर आयेंगे, इसलिए उनका धरती पर आना नबूअत के ख़ात्मा के ख़िलाफ़ नहीं है।

[1] यानी जन्नत में फ़रिश्ते ईमानवालों को या ईमानवाले एक-दूसरे को सलाम करेंगे।

[2] कुछ लोग شاهد (शाहिद) का मतलब मौजूद करते हैं जो क़ुरआन के मायेना में तबदीली है। नबी ﷺ अपनी उम्मत की गवाही देंगे, उनकी भी जो आप पर ईमान लाये और उनकी भी जो आप को झुठलाते रहे। आप ﷺ ईमानवालों को उन के वज़ू के अंगों से पहचान लेंगे जो चमकते होंगे, इसी तरह आप ﷺ अन्य नबियों (सन्देष्टाओं) की गवाही देंगे कि उन्होंने अपनी-अपनी उम्मत को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था और यह गवाही अल्लाह के दिये हुए यक़ीनी इल्म की बिना पर होगी, इसलिए नहीं कि आप ﷺ सभी रसूलों को अपनी नज़र से देखते रहे हैं, यह ईमान तो क़ुरआन के सूत्रों (आयतों) के ख़िलाफ़ है।

[3] जिस तरह चिराग़ से अंधेरा दूर हो जाता है, उसी तरह आप ﷺ के ज़रिये कुफ़्र और शिर्क (मूर्तिपूजा) के अंधेरे दूर हुए, इस के सिवाय इस चिराग़ से रौशनी ले कर जो इज़्ज़त व

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿47﴾

४७. और आप ईमानवालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए कि उन के लिए अल्लाह (तआला) की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) है।

وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذَاهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿48﴾

४८. और काफ़िरों व मुनाफ़िक़ों का कहना न मानिए, और जो दुख (उन की तरफ़ से) पहुँचे उसकी फ़िक्र न कीजिए, अल्लाह पर भरोसा रखिये, अल्लाह काम बनाने के लिए काफ़ी है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا ۖ فَمَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿49﴾

४९. हे मुसलमानो! जब तुम मुसलमान औरतों से शादी करो, फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो तो उन पर तुम्हारा कोई (हक़) इद्दत (तलाक़ के बाद मुक़र्रर वक़्त तक की मना की हुई मुद्दत) का नहीं जिसकी तुम गिन्ती करो।[1] तो तुम उन्हें कुछ न कुछ दे दो और अच्छी तरह उन्हें विदा कर दो।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ اللَّاتِي آتَيْتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّاتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ

५०. हे नबी! हम ने तेरे लिए तेरी वे बीवियाँ हलाल (वैध) कर दी हैं, जिन्हें तू उनकी महर (स्त्री-दान) दे चुका है, और वे दासियाँ भी जो अल्लाह (तआला) ने लड़ाई में तुझे दी हैं और तेरे चाचा की पुत्रियाँ, फूफी की पुत्रियाँ, तेरे मामा की पुत्रियाँ और तेरे मौसी की पुत्रियाँ भी जिन्होंने तेरे साथ हिजरत की हैं, और वह ईमानवाली औरत जो ख़ुद को नबी को दान कर दे, यह उस हालत में कि ख़ुद अगर नबी भी उस से विवाह करना चाहे,[2] यह ख़ास तौर से



---

एहतेराम हासिल करना चाहे कर सकता है, इसलिए कि यह चिराग़ क़यामत तक रौशन है।

[1] शादी के बाद जिन औरतों से सहवास (जिमाअ) किया जा चुका हो और वह अभी जवान हो, ऐसी औरतों को अगर तलाक़ मिल जाये तो उनकी «इद्दत» तीन माहवारी है। (अल-बक़र:-२२८) यहाँ उन औरतों का क़ानून बताया जा रहा है जिनका विवाह हुआ हो लेकिन पति-पत्नी के बीच जिमाअ नहीं हुआ, उनको अगर तलाक़ मिल जाये तो कोई इद्दत नहीं है। यानी ऐसी बिना जिमाअ तलाक़ शुदा औरत बिना इद्दत गुज़ारे, तुरन्त कहीं विवाह करना चाहे तो कर सकती है। हाँ, अगर सहवास से पहले पति की मौत हो जाये तो फिर उसे चार महीने दस दिन इद्दत गुज़ारनी पड़ेगी।

[2] यानी अपने आप को दान करने वाली औरत, अगर आप ﷺ उस से विवाह करना चाहें तो बिना महर के आप ﷺ के लिए उसे अपने निकाह में लेना जायेज़ है।

خٰلٰتِكَ الّٰتِیْ هَاجَرْنَ مَعَكَ٘ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِیِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِیُّ اَنْ یَّسْتَنْكِحَهَا٘ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَیْهِمْ فِیْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ لِكَیْلَا یَكُوْنَ عَلَیْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴿50﴾

तेरे लिए ही है और दूसरे मुसलमानों के लिए नहीं।[1] हम उसे अच्छी तरह जानते हैं जो हम ने उन पर उनकी बीवियों और दासियों के बारे में (आदेश) मुकर्रर कर रखे हैं,[2] यह इसलिए कि तुझ पर कोई मुसीबत पैदा न हो। अल्लाह (तआला) बड़ा माफ़ करने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

تُرْجِیْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِیْۤ اِلَیْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَیْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْكَ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤی اَنْ تَقَرَّ اَعْیُنُهُنَّ وَلَا یَحْزَنَّ وَیَرْضَیْنَ بِمَاۤ اٰتَیْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ مَا فِیْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِیْمًا حَلِیْمًا ﴿51﴾

५१. उन में से जिसे तू चाहे दूर रख दे और जिसे चाहे पास रख ले, और अगर तू उन में से भी किसी को अपने पास बुला ले जिन्हें तूने अलग कर रखा था तो तुझ पर कोई हर्ज नहीं, इस में इस बात की अधिक उम्मीद है कि इन (औरतों) की आंखें ठंडी रहें और वे दुखी न हों और जो कुछ भी तू उन्हें दे दे उस से वे सब ख़ुश रहें, तुम्हारे दिलों में जो कुछ है उसे अल्लाह (अच्छी तरह) जानता है।[3] अल्लाह (तआला) ज़्यादा इल्म वाला सहनशील (हलीम) है।



---

[1] यह इजाज़त केवल आप ﷺ के लिए है, दूसरे मुसलमानों को लाज़िम है कि वे महर के हक़ अदा करें तब विवाह (शायद) जायेज़ होगा।

[2] यानी विवाह के जो हक़ूक़ और शर्तें हैं जो हम ने फ़र्ज़ किये हैं, जैसे चार से ज़्यादा बीवियाँ एक ही समय में कोई इंसान नहीं रख सकता, विवाह के लिए वली, गवाह और महर ज़रूरी है, लेकिन दासियाँ जितनी भी कोई चाहे रख सकता है, किन्तु दासियों का प्रचलन (रिवाज) अब ख़त्म हो गया।

[3] यानी तुम्हारे दिल में जो कुछ है उन में यह बात भी निश्चित रूप से है कि सब पत्नियों का प्रेम दिल में बराबर नहीं है, क्योंकि दिल पर किसी का बस नहीं है, इसलिए पत्नियों के बीच बारी में, पालन-पोषण और दूसरे जीवन हेतु (उमूर ज़िन्दगी) और सुविधाओं में बराबरी ज़रूरी है, जिसका एहतेमाम इंसान कर सकता है। दिलों के झुकाव में बराबरी चूंकि बस ही में नहीं है, इसलिए अल्लाह तआला उस पर पकड़ भी नहीं करेगा अगर दिली मुहब्बत किसी एक बीवी से उसके साथ ख़ास सुलूक की वजह न हो। इसीलिए नबी ﷺ फ़रमाया करते थे "हे अल्लाह! यह जो मेरा बटवारा है जो मेरे बस में है, लेकिन जिस पर तेरा बस है मैं उस पर बस नहीं रखता, उस में मुझे लज्जित (शर्मिन्दा) न करना।" (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा और मुसनद अहमद ६\१४४)

५२. इसके बाद दूसरी औरतें आप के लिए हलाल नहीं और न यह (जायेज़ है) कि उन्हें छोड़कर दूसरी औरतों से (विवाह करें) अगरचे उन का रूप अच्छा भी लगता हो[1] लेकिन जो तेरी दासियाँ हों, अल्लाह हर चीज़ का (पूरा) निगराँ है।

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ﴿52﴾

५३. हे मुसलमानो ! जब तक तुम्हें इजाज़त न दी जाये तुम नबी के घरों में न जाया करो, खाने के लिए ऐसे समय में कि खाना पकने का इंतेज़ार करते रहे, बल्कि जब बुलाया जाये तो जाओ और जब खा चुको तो निकल खड़े हो, वहीं बातों में मश्ग़ूल न हो जाओ। नबी को तुम्हारे इस काम से कष्ट होता है, लेकिन वह तुम्हारा आदर (एहतेराम) कर जाते हैं और अल्लाह (तआला) सच का बयान करने में किसी की फ़िक्र नहीं करता,[2] और जब तुम नबी की बीवियों से कोई चीज़ माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगो।[3] तुम्हारे और उन के दिलों के लिए पूरी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ﴿53﴾

---

[1] इख़्तेयार की आयत के नाज़िल होने के बाद पाक बीवियों ने दुनियावी सुख-सुविधा (ऐश-आराम) के साधनों (ज़रिया) को छोड़कर कठिनाई से नबी ﷺ के साथ रहना पसन्द किया था। इसका बदला अल्लाह ने यह दिया कि उन पाक बीवियों के अलावा (जिनकी तादाद उस समय नौ थी) दूसरी औरतों के साथ विवाह करने या उन में से किसी को तलाक़ दे कर उस की जगह पर किसी दूसरे से विवाह करने से रोक दिया। कुछ कहते हैं कि बाद में आप ﷺ को यह हक़ दे दिया गया था, लेकिन आप ﷺ ने कोई विवाह नहीं किया। (इब्ने कसीर)

[2] इस आयत के नाज़िल होने की वजह यह है कि नबी ﷺ की दावत पर सहाबा केराम हाज़िर हुए, जिन में से कुछ खाने के बाद भी बैठे हुए बातें करते रहे जिस से आप ﷺ को ख़ास तकलीफ़ हुई, लेकिन आप ﷺ ने आदाब और अख़लाक़ के सबब उन्हें जाने के लिए नहीं कहा। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतुल अहज़ाब) इसलिए इस आयत में खाने के आदाब सिखाये गये कि पहले तो तब जाओ जब खाना तैयार हो जाये, पहले ही से धरना देकर न बैठे रहो। दूसरे खाना ख़त्म करने के तुरन्त बाद घरों को चले जाओ, वहाँ बैठे हुए बातें न करो, खाने का बयान तो नाज़िल होने के सबब किया गया है, नहीं तो मतलब यह है कि जब भी तुम्हें बुलाया जाये चाहे खाने के लिए या किसी दूसरे काम के लिये इजाज़त के बिना घर में दाख़िल न हो।

[3] यह हुक्म हज़रत उमर की मर्ज़ी के मुताबिक़ नाज़िल हुआ। हज़रत उमर ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरख़ास्त किया कि हे रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप ﷺ के पास अच्छे बुरे बहुत से लोग आते हैं, काश आप ﷺ पाक बीवियों को पर्दे का हुक्म दें तो क्या अच्छा हो। इस तरह यह हुक्म अल्लाह ने

पाकीजगी यही है,[1] न तुम्हें मुनासिब है कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ दो और न तुम्हें यह वैध (उचित) है कि आप के बाद किसी वक़्त भी आप की पत्नियों से विवाह करो। (याद रखो) अल्लाह के नजदीक यह बहुत बड़ा (पाप) है ।

إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا (54)

५४. अगर तुम किसी चीज को जाहिर करो या छिपाये रखो तो अल्लाह हर चीज का अच्छी तरह इल्म रखने वाला है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ۗ وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا (55)

५५. उन औरतों पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने पिताओं, अपने पुत्रों और भाईयों, अपने भतीजों, भांजों और अपनी (मेलजोल की) औरतों और जिन के वे मालिक हैं (दासी, दास) के सामने हों[2] (औरतो!) अल्लाह से डरती रहो, अल्लाह तआला बेशक हर चीज पर गवाह है।

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا (56)

५६. अल्लाह (तआला) और उस के फ़रिश्ते इस नबी पर दरूद भेजते हैं। हे ईमानवालो! तुम (भी) इन पर दरूद भेजो और ज़्यादा सलाम (भी) भेजते रहा करो।[3]

---

नाजिल किया। (सहीह बुखारी, किताबुस्सलात व तफ़सीर सूर: अल-बक़र:, मुस्लिम बाबु फ़ज़ाईले उमर बिन ख़त्ताब)

[1] यह पर्दे का राज और सबब है कि इस से औरत-मर्द दोनों के दिल शक और शुब्हा से और लगातार फ़साद में पड़ने से महफ़ूज रहेंगे।

[2] जब औरतों के लिए पर्दे का हुक्म नाज़िल हुआ, तो फिर घर में मौजूद क़रीबी या हर समय आने-जाने वाले रिश्तेदारों के बारे में सवाल हुआ कि उन से पर्दा किया जाये या नहीं? इस आयत में उन रिश्तेदारों का बयान है जिन से पर्दे की जरूरत नहीं है। इसका तफ़सीली बयान सूर: नूर की आयत ३१ (وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ) में भी गुजर चुका है, उसे देख लीजिए।

[3] इस आयत में नबी ﷺ के उस मर्तबा का बयान है, जो आकाशों में आप ﷺ को हासिल है, और वह यह है कि अल्लाह (तआला) फ़रिश्तों में आप ﷺ की तारीफ़ और बड़ाई करता और शांति (रहमत) भेजता है और फ़रिश्ते भी आप ﷺ के लिए ऊंचे मुक़ाम की दुआ करते हैं, साथ ही साथ अल्लाह तआला ने धरती वालों को हुक्म दिया कि वह भी आप ﷺ पर सलात व सलाम भेजें ताकि आप ﷺ की तारीफ़ में धरती और आकाश दोनों शामिल हो जायें।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا (57)

५७. जो लोग अल्लाह और उस के रसूल को तकलीफ़ देते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह की लानत है और उन के लिए बड़ा अपमानित (ज़लील) करने वाला अज़ाब है।[1]

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا (58)

५८. और जो लोग ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों को तकलीफ़ दें बिना किसी अपराध (जुर्म) के जो उन से हुआ हो, वह (बड़ा) आक्षेप (बुहतान) और खुले गुनाह का बोझ उठाते हैं।[2]

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِن جَلَابِيبِهِنَّ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا (59)

५९. हे नबी! अपनी बीवियों से और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें,[3] इस से तुरन्त उनकी पहचान हो जाया करेगी फिर न कष्ट पहुँचायी जायेंगी,[4]

---

[1] अल्लाह को तकलीफ़ देने का मतलब उन सभी कामों का करना है जिसको उसने नापसन्दीदा कहा है, वर्ना अल्लाह को तकलीफ़ देने की कौन क़ुदरत रखता है ? जैसे मूर्तिपूजक, यहूदी और इसाई वगैरह अल्लाह के लिए औलाद साबित करते हैं या जिस तरह हदीस क़ुदसी में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है : "आदम की औलाद मुझे तकलीफ़ देती हैं, ज़माना को गाली देती है जबकि मैं ही ज़माना हूँ, उस के दिन और रात का चक्र मेरे ही हुक्म से चलता है।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अल-जासिया)

[2] यानी उन को बदनाम करने के लिए उन पर बुहतान लगाना, उन की इज़्ज़त घटाना और अपमान (ज़लील) करना, जैसे कुछ गुमराह लोग सुबह-शाम सहाबा केराम को गालियाँ देते हैं और उन से ऐसी बातें सम्बन्धित करते है जिन को उन्होंने किया ही नहीं।

[3] جَلَابِيب बहुवचन (जमा) है جِلْبَاب का जो ऐसी बड़ी चादर को कहते हैं जिससे पूरा शरीर (जिस्म) छिप जाये। अपने ऊपर चादर लटकाने से मुराद यह है कि अपने मुँह पर इस प्रकार घूँघट निकाला जाये कि जिस से मुँह का ज़्यादातर हिस्सा छिप जाये और आँखें झुकाकर चलने पर उसे रास्ता भी दिखायी दे।

[4] यह पर्दे के राज़ और उस के फ़ायदे का बयान है कि इस से एक सम्मानित (बाइज़्ज़त) और सभ्य (बावक़ार) औरत और बेहया औरत के बीच पहचान होगी। पर्दे से मालूम होगा कि यह सम्मानित परिवार की औरत है जिस से छेड़छाड़ की किसी को हिम्मत नहीं होगी, इस के विपरीत, बेपर्दा औरतें ग़लत लोगों की निगाह का केन्द्र (मरकज़) और उनकी कामवासना (ख़्वाहिशात) का निशाना बनेंगी।

और अल्लाह (तआला) बड़ा माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

६०. अगर (अब भी) ये मुनाफ़िक़ (मिथ्याचारी) और वे जिन के दिलों में रोग है और मदीना के वे वासी जो ग़लत अफ़वाहें उड़ाने वाले हैं, रूक न जायें तो हम आप को उन के (हलाक करने) पर लगा देंगे फिर तो वे कुछ ही दिन आप के साथ इस (नगर) में रह सकेंगे।

لَئِن لَّمْ يَنتَهِ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ﴿60﴾

६१. उन पर धिक्कार (लानत) बरसायी गयी, जहाँ भी मिल जायें पकड़े जायें और ख़ूब टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायें।[1]

مَّلْعُونِينَ ۖ أَيْنَمَا ثُقِفُوا أُخِذُوا وَقُتِّلُوا تَقْتِيلًا ﴿61﴾

६२. उन से पहले के लोगों में भी अल्लाह का यही क़ानून लागू रहा, और तू अल्लाह के क़ानून में कभी भी बदलाव नहीं पायेगा।

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلُ ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿62﴾

६३. लोग आप से क़यामत के बारे में सवाल करते हैं, (आप) कह दीजिए कि इसका इल्म तो अल्लाह ही को है आप को क्या पता, बहुत मुमकिन है कि क़यामत बहुत क़रीब हो।

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ﴿63﴾

६४. अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों पर लानत (धिक्कार) भेजी है, और उन के लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿64﴾

६५. जिस में वे हमेशा रहेंगे, वह कोई पक्षधर (वली) और मदद करने वाला न पायेंगे।

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿65﴾

[1] यह हुक्म नहीं है कि उनको पकड़-पकड़ कर मार डाला जाये बल्कि यह शाप (बद्दुआ) है कि वे अपने गुमराह ख़्यालात और इन गतिविधियों (हरकात) से न रूके तो उनका बड़ा नसीहत वाला अंजाम होगा। कुछ कहते हैं कि यह हुक्म है, लेकिन ये मुनाफ़िक़ आयत के नाज़िल होने के बाद रूक गये थे, इसलिए उन के ख़िलाफ़ यह कार्यवाही नहीं की गयी जिसका हुक्म इस आयत में दिया गया था। (फ़तहुल क़दीर)

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَٰلَيْتَنَآ أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ﴿66﴾

६६. उस दिन उन के मुंह आग में उलटे-पलटे जायेंगे । (पछतावा और अफ़सोस से) कहेंगे कि काश! हम अल्लाह (तआला) और रसूल के हुक्म की इताअत करते ।

وَقَالُوا رَبَّنَآ إِنَّآ أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ﴿67﴾

६७. और वे कहेंगे, हे हमारे रब! हम ने अपने सरदारों और बड़ों की मानी जिन्होंने हमें सीधे रास्ते से भटका दिया ।[1]

رَبَّنَآ ءَاتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ﴿68﴾

६८. हे हमारे रब! तू उन्हें दोगुना अज़ाब दे और उन पर बहुत बड़ी लानत भेज ।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ ءَاذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا ۚ وَكَانَ عِندَ اللَّهِ وَجِيهًا ﴿69﴾

६९. हे ईमानवालो! उन लोगों जैसे न बन जाओ जिन्होंने मूसा को तकलीफ़ दी, तो जो बात उन्होंने कही थी अल्लाह ने उन्हें उस से आज़ाद कर दिया,[2] और वह अल्लाह के पास बाइज़्ज़त थे ।

---

[1] यानी हम ने तेरे संदेष्टाओं (रसूलों) और उलमा के बजाय अपने उन बड़ों और बुज़ुर्गों की पैरवी किया, लेकिन आज हमें मालूम हुआ कि उन्होंने हमें तेरे संदेष्टाओं से दूर रखकर सीधे रास्ते से भटकाये रखा । बुज़ुर्गों का अनुसरण और बाप-दादा के अनुकरण (पैरवी) आज भी लोगों में भटकावे की वजह है । काश! मुसलमान अल्लाह की आयतों पर ग़ौर करके इन पगडंडियों से निकलें और क़ुरआन व हदीस के सीधे रास्ते को अपना लें कि नजात केवल अल्लाह और अल्लाह के रसूलुल्लाह ﷺ के अनुसरण में ही है न कि धर्मगुरूओं (मज़हबी पेशवाओं) और बड़ों के अनुसरण में या बुज़ुर्गों की पुराने रीति-रिवाजों को अपनाने में ।

[2] इसकी तफ़सीर हदीस में इस तरह आई है कि हज़रत मूसा عليه السلام बहुत शर्मीले थे, अत: अपना शरीर कभी उन्होंने किसी के सामने नंगा नहीं किया । इस्राईली वंश के लोग कहने लगे कि शायद मूसा के शरीर पर सफेद दाग़ या दूसरा इसी तरह का रोग है, इसलिए हर समय कपड़े पहनकर ढका-छिपा रहता है । एक बार अकेले में हज़रत मूसा ग़ुस्ल करने लगे, कपड़े उतार कर एक पत्थर पर रख दिये, पत्थर (अल्लाह के हुक्म से) कपड़े लेकर भाग खड़ा हुआ, हज़रत मूसा उस के पीछे-पीछे दौड़े यहाँ तक कि इस्राईलियों की एक मजलिस में पहुँच गये, उन्होंने हज़रत मूसा को नग्नवस्था में देखा तो उन के सारे शक दूर हो गये, मूसा बहुत ख़ूबसूरत, जवान और हर तरह के दाग़ से पाक थे । इस तरह अल्लाह तआला ने मोजिज़ाती तौर से पत्थर के ज़रिये उन के इस इल्ज़ाम और शक को दूर कर दिया जो इस्राईल की औलाद की तरफ़ से उन पर लगाया जाता था । (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया)

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿70﴾

७०. हे ईमानवालो! अल्लाह (तआला) से डरो और सीधी-सीधी (सच) बातें किया करो।

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿71﴾

७१. ताकि अल्लाह (तआला) तुम्हारे काम सुधार दे और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे, और जो भी अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म की इत्तेबा करेगा उस ने बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ۗ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿72﴾

७२. हम ने अपनी अमानत को आकाशों पर और धरती पर और पहाड़ों पर पेश किया (लेकिन) सभी ने उस के उठाने से इंकार कर दिया और उस से डर गये, (लेकिन) इंसान ने उसे उठा लिया, वह बड़ा ज़ालिम और जाहिल है।

لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿73﴾

७३. (यह इसीलिए) कि अल्लाह (तआला) मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मूर्तिपूजक मर्दों और मूर्तिपूजक औरतों को सज़ा दे और ईमानवाले मर्द और ईमानवाली औरतों की तौबा क़ुबूल कर ले, और अल्लाह तआला बड़ा माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

## सूरतु सबा-३४

## سُوْرَةُ سَبَاٍ

सूरः सबा मक्का में नाज़िल हुई इस में चौवन आयतें और छः रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿1﴾

१. सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसकी (मिल्कियत में) वह सब कुछ है जो आकाशों और धरती में है और आख़िरत में भी तारीफ़ उसी के लिये है, वह (बड़ा) हिक्मत वाला और (पूरी) ख़बर रखने वाला है।

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ﴿2﴾

२. जो धरती में जाये और जो उस से निकले, जो आकाश से उतरे और जो चढ़ कर उस में जाये वह सब से बाख़बर है, और वह बड़ा रहम करने वाला बड़ा माफ़ करने वाला है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَالِمِ الْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿3﴾

३. और काफ़िर कहते हैं कि हम पर क़यामत क़ायेम नहीं होगी। आप कह दीजिए कि मुझे मेरे रब की क़सम! जो ग़ैब का जानने वाला है कि वह बेशक तुम पर क़ायेम होगी, अल्लाह (तआला) से एक कण (ज़र्रा) की तरह की चीज़ भी छिपी नहीं, न आकाशों में और न धरती में, बल्कि उस से भी छोटी और बड़ी सभी चीज़ खुली किताब में मौजूद है।

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿4﴾

४. ताकि वह ईमानवालों और नेक लोगों को अच्छा बदला अता करे,[1] यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और बाइज़्ज़त रिज़्क़ है।

وَالَّذِينَ سَعَوْ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رِجْزٍ أَلِيمٌ ﴿5﴾

५. और हमारी आयतों को नीचा दिखाने में जिन्होंने कोशिश किया है ये वे लोग हैं जिन के लिए बड़ी बुरी तरह का सख़्त अज़ाब है।

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقَّ وَيَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿6﴾

६. और जिन्हें इल्म है वे देख लेंगे कि जो कुछ आप की तरफ़ आप के रब की तरफ़ से नाज़िल हुआ है वह (सरासर) सच है,[2] और अल्लाह प्रभावशाली तारीफ़ वाले के रास्ते की हिदायत करता है।

---

[1] यह क़यामत होने का सबब है, यानी क़यामत इसलिए क़ायम होगी और सभी इन्सानों को अल्लाह इसलिये दोबारा ज़िन्दा करेगा कि उन की नेकी का बदला अता करे, क्योंकि बदला ही के लिए उसने यह दिन रखा है अगर यह बदले का दिन न हो तो फिर इसका मतलब यह होगा कि नेक लोग और पापी बराबर हैं, और यह बात इंसाफ़ के बहुत ख़िलाफ़ है और बन्दों ख़ास तौर से परहेज़गारों पर ज़ुल्म होगा। (وما ربك بظلام للعبيد)

[2] यहाँ देखने से मुराद दिल से देखना यानी यक़ीनी इल्म है, सिर्फ़ आँख से देखना नहीं आलिमों से मुराद सहाबा (नबी के सहाबा) या सभी मुसलमान हैं, यानी ईमानवाले इस बात को जानते और इस पर यक़ीन करते हैं।

७. और काफ़िरों ने कहा, आओ हम तुम्हें एक ऐसा इंसान बतायें जो तुम्हें यह ख़बरें पहुँचा रहा है कि जब तुम पूरी तरह से कण-कण (जर्रा-जर्रा) हो जाओगे तो तुम फिर से एक नई जिन्दगी में आओगे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿7﴾

८. (हम नहीं कहते) कि ख़ुद उसने ही अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया है या उसे जुनून हो गया है, बल्कि (हक़ीक़त यह है) कि आख़िरत पर ईमान न रखने वाले ही अज़ाब में और दूर के भटकावे में हैं।

أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَم بِهِ جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ﴿8﴾

९. तो क्या वे अपने आगे-पीछे आकाश और धरती को देख नहीं रहे हैं? अगर हम चाहें तो उन्हें धरती में धँसा दें या उन पर आकाश के टुकड़े गिरा दें,[1] बेशक इस में पूरा सबूत है हर उस बंदे के लिए जो (दिल से) ध्यानमग्न (मुतविज्जह) हो।

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِن نَّشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ﴿9﴾

१०. और हम ने दाऊद पर अपना फ़ज़्ल किया,[2] हे पहाड़ो! उस के साथ मेरी तस्बीह किया करो और पक्षियों को भी (यही हुक्म है) और हम ने उस के लिए लोहे को मुलायम कर दिया।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا فَضْلًا ۖ يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ﴿10﴾



---

[1] यानी यह आयत दो बातों पर आधारित (मबनी) है, एक अल्लाह की पूरी क़ुदरत की चर्चा पर जिसका अभी बयान हुआ। दूसरी, कुफ़्फ़ार के लिए चेतावनी (तंबीह) और धमकी पर कि जो अल्लाह आकाश और धरती की रचना पर इस तरह क़ुदरत वाला है कि उन पर और उन के बीच हर चीज़ पर उस का हक़ और क़ुदरत है, वह जब चाहे उन पर अपना अज़ाब भेजकर उन को बरबाद कर सकता है, धरती में धँसाकर भी, जैसे क़ारून को धँसाया या आकाश के टुकड़े गिरा कर, जैसे ऐका वालों को तबाह कर दिया गया।

[2] यानी नबूअत के साथ मुल्क और दूसरे कई ख़ास सिफ़्तों से सम्मानित (बाइज़्ज़त) किया।

أَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (11)

**११**. कि तू पूरी-पूरी कवचें बना और जोड़ों में अंदाजा रख, और तुम सब नेकी के काम करो, (यक़ीन करो) मैं तुम्हारे अमल देख रहा हूं।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ۭ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۭ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ (12)

**१२**. और हम ने सुलैमान के लिए हवा को (वश में कर दिया) कि सुबह की मंजिल उसकी एक महीने की होती थी और शाम की मंजिल भी[1] और हम ने उन के लिए तांबे का चश्मा जारी कर दिया,[2] और उस के रब के हुक्म से कुछ जिन्नात भी जो उस के अधीन (ताबे) उस के पास काम करते थे, और उन में से जो भी हमारे हुक्म (आदेश) की नाफ़रमानी करे हम उसे भड़कती हुई आग के अज़ाब का मज़ा चखायेंगे।[3]

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَاۗءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ۭ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ۭ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ (13)

**१३**. जो कुछ सुलैमान चाहते वह (जिन्नात) तैयार कर देते, जैसे क़िला, चित्र (स्मारक), तालाब के समान लगन (तगाड़) और चूल्हों पर क़ायम मज़बूत देगें (बड़े पतीले)। हे दाऊद की औलाद! उसका शुक्रिया अदा करने के लिए नेकी के काम करो, मेरे बन्दों में से शुक्रगुज़ार बन्दे कम ही होते हैं।



---

[1] यानी हज़रत सुलैमान मुल्क के सरदारों और फ़ौज के साथ सिंहासन पर आसीन हो जाते और जिधर आप का हुक्म होता हवा उसे इतनी तेज़ चाल से ले जाती कि एक महीने की दूरी सुबह से दोपहर तक और इसी तरह एक महीने की दूरी दोपहर से रात तक पूरी कर ली जाती, इस तरह एक दिन में दो महीनों की यात्रा (सफ़र) पूरी हो जाती।

[2] यानी हम ने जैसे दाऊद के लिए लोहा नर्म कर दिया था, हज़रत सुलैमान के लिए तांबे का चश्मा जारी कर दिया ताकि तांबे की धात से जो चाहें बनायें।

[3] ज़्यादातर भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) के ख़्याल से यह सज़ा क़यामत के दिन दी जायेगी, लेकिन कुछ के क़रीब यह दुनियावी सज़ा है। वह कहते हैं कि अल्लाह ने एक फ़रिश्ता तैनात कर दिया था जिस के हाथ में आग का कोड़ा होता था, जो जिन्न हज़रत सुलैमान की हुक्म से बेरूख़ी करता फ़रिश्ता वह सोंटा उसे मारता जिस से वह जलकर भस्म हो जाता।

१४. फिर जब हम ने उन पर मौत का हुक्म भेज दिया तो उनकी ख़बर (जिन्नात को) किसी ने न दी सिवाय घुन के कीड़े के जो उनकी लकड़ी को खा रहा था, तो जब (सुलैमान) गिर पड़े उस समय जिन्नों ने जान लिया कि अगर वे ग़ैब का इल्म रखते तो इस अपमान (ज़िल्लत) के अज़ाब में न फंसे रहते ।[1]

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَن لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿14﴾

१५. सबा की क़ौम के लिए अपनी बस्तियों में (अल्लाह के क़ुदरत की) निशानी थी,[2] उन के दायें-बायें दो बाग़ थे। (हम ने उन को हुक्म दिया था कि) अपने रब की अता की हुई रिज़्क़ को खाओ और उसका शुक्रिया अदा करो, यह साफ़ नगर है और रब माफ़ करने वाला है।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّتَانِ عَن يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۖ كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبٌّ غَفُورٌ ﴿15﴾

१६. लेकिन उन्होंने मुख फेरा तो हम ने उन पर तेज़ बाढ़ का (पानी) भेज दिया और उन के (हरे-भरे) बाग़ों के बदले दो (ऐसे) बाग़ दिये जो मज़े में कड़वे-कसैले और ज़्यादातर झाऊ और कुछ बेरी के पेड़ों वाले थे।

فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُم بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثْلٍ وَشَيْءٍ مِّن سِدْرٍ قَلِيلٍ ﴿16﴾

१७. हम ने उनकी नाशुक्री का यह बदला उन्हें दिया, हम (ऐसे सख़्त) सज़ा बड़े-बड़े नाशुक्रों को ही देते हैं।

ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُم بِمَا كَفَرُوا ۖ وَهَلْ نُجَازِي إِلَّا الْكَفُورَ ﴿17﴾



[1] हज़रत सुलैमान के ज़माने में जिन्नात के बारे में यह मशहूर हो गया था कि यह ग़ैब की बातें जानते हैं, अल्लाह ने हज़रत सुलैमान की मौत के ज़रिये इस भ्रम की ग़लती को ज़ाहिर कर दिया।

[2] सबा वही समुदाय (क़ौम) है जिस सबा की रानी मशहूर है, जो हज़रत सुलैमान के ज़माने में मुसलमान हो गई थी। समुदाय ही के नाम पर देश का नाम भी सबा था, इस समय यह इलाक़ा यमन के नाम से मशहूर है, यह बड़ा सम्पन्न (ख़ुशहाल) देश था, यह देश ज़मीनी और समुद्री तिजारत में भी ख़ास था और खेती और उपज में मशहूर। यह दोनों ही चीज़ें किसी देश और समुदाय की ख़ुशहाली की वजह होती हैं, इसी धन-दौलत की ज़्यादती को यहाँ अल्लाह की क़ुदरत का लक्षण (निशानी) कहा गया है।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ۖ سِيرُوا فِيهَا لَيَالِيَ وَأَيَّامًا آمِنِينَ (18)

१८. और हम ने उन के और उन बस्तियों के बीच जिन में हम ने बरकत (सुख-सुविधा) अता कर रखी थी, कुछ बस्तियाँ दूसरी रखी थीं जो रास्ते पर दिखायी देती थीं[1] और उन में चलने के मुक़ाम मुक़र्रर कर दिये थे, उन में रातों और दिनों में अमन व अमान से चलते-फिरते रहो।

فَقَالُوا رَبَّنَا بَاعِدْ بَيْنَ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ (19)

१९. लेकिन उन्होंने दोबारा दुआ की कि हे हमारे रब! हमारी यात्रायें दूर तक कर दे, और चूँकि ख़ुद उन्होंने अपने हाथों अपना बुरा किया इसलिए हम ने उन्हें (पुरानी) कहानी के रूप में कर दिया[2] और उन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये,[3] बेशक हर सब्र और शुक्रिया अदा करने वाले के लिए इस (घटना) में बहुत सी नसीहतें हैं।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ (20)

२०. और शैतान ने उन के बारे में अपना इरादा (अनुमान) सच कर दिखाया, ये लोग (सब के सब) उस के पैरोकार बन गये सिवाय ईमानवालों के एक गुट के।

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ ۗ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ (21)

२१. और शैतान का उन पर कोई दबाव (और बल) न था, लेकिन इसलिए कि हम उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों में (अच्छी तरह से) ज़ाहिर कर दें जो उस से शक में हैं, और आप का रब हर चीज़ का रक्षक (मुहाफ़िज़) है।

---

[1] बरकतों वाली बस्तियों से मुराद शाम (सीरिया) की बस्तियाँ हैं, यानी हम ने सबा देश (यमन) और शाम के बीच सड़क के किनारे बस्तियाँ आबाद की थीं।

[2] यानी इन को इस तरह नापैद किया कि इन की बरबादी की कहानी हर ज़ुबान पर हो गयी और बैठकों और मजलिसों में चर्चा का विषय बन गया।

[3] यानी उन्हें विभाजित (तक़सीम) और छिन्न-भिन्न कर दिया, जैसाकि सबा की मशहूर जातियाँ कई जगहों पर जा आबाद हुईं, कोई यसरिब और मक्का आ गया कोई सीरिया के इलाक़ों में चला गया, कोई कहीं, कोई कहीं।

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم مِّن ظَهِيرٍ (22)

२२. कह दीजिए कि अल्लाह के सिवाय जिन-जिन का तुम्हें भ्रम है (सब को) पुकार लो, न उन में से किसी को आकाशों और धरती में से एक कण (ज़र्रा) का हक़ है, न उन का उन में कोई हिस्सा है और न उन में से कोई अल्लाह का शरीक है।

وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقَّ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ (23)

२३. और सिफ़ारिश (की दुआ) भी उसके सामने कोई फ़ायेदा नहीं देती सिवाय उन के जिन के लिए इजाज़त हो जाये, यहाँ तक कि जब उन के दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो पूछते हैं तुम्हारे रब ने क्या कहा? जवाब देते हैं कि सच कहा और वह बड़ा ऊँचा और बहुत बड़ा है।

قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (24)

२४. पूछिये कि तुम्हें आकाशों और धरती से रिज़्क़ कौन पहुँचाता है? (ख़ुद) जवाब दीजिए कि अल्लाह (महान)। (सुनो), हम या तुम या तो बेशक हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में है।[1]

قُل لَّا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ (25)

२५. कह दीजिए कि हमारे किये हुए गुनाहों के बारे में तुम से कुछ न पूछा जायेगा और न तुम्हारे कर्मों की पूछताछ हम से होगी।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ (26)

२६. (उन्हें) ख़बरदार कर दीजिए कि हम सब को हमारा रब जमा करके फिर हम में सच्चा फ़ैसला कर देगा,[2] और वह फ़ैसला करने वाला सब कुछ जानने वाला है।



[1] साफ़ बात है कि गुमराह वही होगा जो ऐसी चीज़ों को माबूद समझता है जिनका आकाश और धरती से जीविका (रिज़्क़) पहुँचाने में कोई हिस्सा नहीं, न वह बारिश कर सकते हैं न कुछ उगा सकते हैं, इसलिए सच पर हक़ीक़त में तौहीद वाले ही हैं, न कि दोनों।

[2] यानी उस के हिसाब से फल देगा, अच्छों को स्वर्ग (जन्नत) में और बुरों को नरक (जहन्नम) में दाख़िल करेगा।

قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُم بِهِ شُرَكَاءَ ۖ كَلَّا ۚ بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿27﴾

२७. कह दीजिए कि अच्छा मुझे भी उन्हें दिखा दो जिन्हें तुम अल्लाह का साझीदार बनाकर उस के साथ शामिल कर रहे हो, ऐसा कभी नहीं, बल्कि वही अल्लाह है जबरदस्त और हिक्मत वाला।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿28﴾

२८. और हम ने आप को सभी लोगों के लिए ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और होशियार करने वाला बनाकर भेजा है, लेकिन (यह सच है कि) लोगों में ज़्यादातर नावाक़िफ़ हैं।[1]

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿29﴾

२९. और पूछते हैं कि वह वादा है कब? अगर सच हो तो बता दो।

قُل لَّكُم مِّيعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ﴿30﴾

३०. जवाब दीजिए कि वादे का दिन ठीक मुक़र्रर है जिस से एक क्षण न तुम पीछे हट सकते हो न आगे बढ़ सकते हो।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن نُّؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿31﴾

३१. और काफ़िरों ने कहा कि हम न तो इस क़ुरआन को मानें न इस से पहले की किताबों को, और हे देखने वाले, काश कि तू इन ज़ालिमों को उस समय देखता जबकि ये अपने रब के सामने खड़े हुए एक-दूसरे पर इल्ज़ाम दे रहे होंगे,[2] नीचे दर्जे के लोग ऊँचे दर्जे के लोगों से कहेंगे[3] कि अगर तुम न होते तो हम ईमान वाले होते।



[1] इस आयत में अल्लाह ने एक तो नबी (मोहम्मद ﷺ) की उमूमी रिसालत का बयान किया है कि आप को पूरी इंसानियत का रहनुमा और हादी बनाकर भेजा गया है, दूसरा यह बयान किया गया कि आप की मर्ज़ी और कोशिश के बावजूद भी ज़्यादातर लोग ईमान (आस्था) से वंचित (महरूम) रहेंगे।

[2] यानी दुनिया में यह कुफ़्र और शिर्क में आपसी साथी और इस नाते एक-दूसरे के ख़ैरख़्वाह थे, लेकिन आख़िरत में आपसी दुश्मन और एक-दूसरे को इल्ज़ाम देंगे।

[3] यानी दुनिया में यह लोग जो बिना सोचे समझे रस्मो रिवाज पर चलते हैं अपने उन नेताओं से कहेंगे जिन के वे दुनिया में पैरोकार बने रहे।

३२. ये ऊँचे लोग उन कमज़ोर लोगों को जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास हिदायत आ चुकने के बाद हम ने तुम्हें उस से रोका था। (नहीं) बल्कि तुम (ख़ुद) मुजरिम थे।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ ۖ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ﴿32﴾

३३. (और इस के जवाब में) यह दुर्बल (कमज़ोर) लोग उन घमन्डियों से कहेंगे, (नहीं, नहीं) बल्कि दिन-रात छल-कपट से हमें अल्लाह के साथ कुफ्र करने और उस के साथ साझीदार मुक़र्रर करने का तुम्हारा हुक्म देना हमारी बेईमानी का सबब हुआ,[1] और अज़ाब को देखते ही सब के सब दिल ही दिल में शर्मिंदा हो रहे होंगे, और काफ़िरों की गर्दनों में हम तौक़ डाल देंगे, उन्हें केवल उन के किये हुए अमल का बदला दिया जायेगा।[2]

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَنْدَادًا ۚ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۚ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿33﴾

३४. और हम ने तो जिस बस्ती में जो भी आगाह करने वाला भेजा, वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो हम उस के साथ कुफ्र करने वाले हैं।[3]

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿34﴾

३५. और कहा कि हम माल और औलाद में ज़्यादा हैं, यह नहीं हो सकता कि हमें यातना (अज़ाब) दिया जाये।

وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿35﴾



---

[1] यानी हम मुजरिम तो उस वक़्त होते जब अपने मन से पैग़म्बरों का इंकार करते, जबकि हक़ीक़त यह है कि तुम रात-दिन हमें गुमराह करने और अल्लाह का इंकार करने और उसका साझी बनाने पर तैयार करते रहे, जिस से अन्ततः (आख़िरकार) हम तुम्हारे पैरोकार बनकर ईमान (आस्था) से महरूम रहे।

[2] यानी दोनों को उन के अमलों की सज़ा मिलेगी, सरदारों को उन के अनुसार और उन के पैरोकारों को उन के अनुसार।

[3] यह नबी ﷺ को सांत्वना (तसल्ली) दी जा रही है कि मक्का के धनवान और सरदार आप ﷺ पर यक़ीन नहीं कर रहे हैं और आप ﷺ को दुख पहुँचा रहे हैं तो यह कोई नई बात नहीं है, हर ज़माने के ख़ुशहाल लोगों ने पैग़म्बरों को नकारा ही है और हर पैग़म्बर पर ईमान लाने वाले सब से पहले समाज के दरिद्र और ग़रीब तबक़े के लोग ही होते थे।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿36﴾

३६. कह दीजिए कि मेरा रब जिस के लिए चाहता है रिज़्क को कुशादा कर देता है और तंग भी कर देता है,[1] लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते ।

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ﴿37﴾

३७. और तुम्हारे माल और औलाद ऐसे नहीं कि तुम्हें हमारे पास (पदों से) करीब कर दें, लेकिन जो ईमान लायें और नेकी के काम करें [2] तो उन के लिए उन के नेकी का दुगुना बदला है, और वे बेख़ौफ़ और मुत्मइन होकर ऊँचे भवनों में रहेंगे ।

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿38﴾

३८. और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने की दौड़-धूप में लगे रहते हैं, यही हैं जो अज़ाब में (पकड़कर) हाज़िर किये जायेंगे ।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿39﴾

३९. कह दीजिए कि मेरा रब अपने बन्दों में जिस के लिए चाहे रिज़्क कुशादा करता है और जिस के लिए चाहे नाप (तंग) कर देता है,[3] और तुम जो कुछ भी अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे अल्लाह उसका (पूरा-पूरा) बदला देगा

---

[1] इस में काफ़िरों के भ्रम और शंका (शक) का बयान किया जा रहा है कि रिज़्क की कुशादगी और तंगी अल्लाह की ख़ुशी और नाख़ुशी का द्योतक (मज़हर) नहीं, बल्कि इस का सम्बन्ध (तआल्लुक़) अल्लाह की हिक्मत और मर्ज़ी से है, इसलिए वह धन उसे भी देता है जिसे पसन्द करता है और उसे भी जिसे नापसन्द करता है और जिसे चाहता है धनी करता है और जिसे चाहता है फ़क़ीर रखता है ।

[2] यानी हमारी मुहब्बत और क़ुरबत हासिल करने का ज़रिया तो सिर्फ़ ईमान और नेक अमल है, जैसे हदीस में फ़रमाया गया : "अल्लाह तुम्हारी शक्ल व सूरत और तुम्हारे धन-दौलत नहीं देखता वह तो तुम्हारे दिलों और अमलों को देखता है ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे, बाब तहरीमे ज़ुल्मिल मुस्लिम)

[3] अत: वह काफ़िर को भी ख़ूब धन देता है, लेकिन किसलिये? ढील देने के लिए और कभी ईमानदार को ग़रीब रखता है, किसलिये? उसकी नेकी और बदला को बढ़ाने के लिए । इसलिए केवल माल की ज़्यादती उसकी ख़ुशी का, और कमी उसकी नाख़ुशी का सबूत नहीं है, यह बार-बार कहना सिर्फ़ बल (ज़ोर) देने के लिये है ।

और वह सब से बेहतर रिज़्क़ अता करने वाला है।

४०. और उन सब को अल्लाह उस दिन जमा करके फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे।[1]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ أَهَٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ﴿40﴾

४१. वे कहेंगे कि तू पाक है और हमारा संरक्षक (निगराँ) तो तू है न कि ये, ये लोग जिन्नों की इबादत करते थे, इनमें से ज़्यादातर को उन्हीं पर ईमान था।

قَالُوا۟ سُبْحَٰنَكَ أَنتَ وَلِيُّنَا مِن دُونِهِمْ ۖ بَلْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ٱلْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُم بِهِم مُّؤْمِنُونَ ﴿41﴾

४२. तो आज तुम में से कोई (भी) किसी के लिए (भी किसी तरह के) फ़ायदे-नुक़सान का मालिक न होगा, और हम ज़ालिमों[2] से कह देंगे कि उस आग का अज़ाब चखो जिसे तुम झुठलाते रहे।

فَٱلْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَلَا ضَرًّا وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ ذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلنَّارِ ٱلَّتِى كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿42﴾

४३. और जब उन के सामने हमारी साफ़-साफ़ आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि यह ऐसा इंसान है जो तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) के देवताओं से रोक देना चाहता है (इस के सिवाय कोई बात नहीं) और कहते हैं कि यह तो गढ़ा हुआ बुहतान है, और सच उन के पास आ चुका फिर भी काफ़िर यही कहते रहे कि

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتُنَا بَيِّنَٰتٍ قَالُوا۟ مَا هَٰذَآ إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَن يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ ءَابَآؤُكُمْ وَقَالُوا۟ مَا هَٰذَآ إِلَّآ إِفْكٌ مُّفْتَرًى ۚ وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿43﴾



[1] यह मुशरिकों को ज़लील करने के लिए अल्लाह फ़रिश्तों से सवाल करेगा, जैसे रसूल ईसा के बारे में आता है कि अल्लाह उन से भी सवाल करेगा, "क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ (मरियम) को अल्लाह के सिवाय माबूद बना लेना?" (अल-मायेद:-११६) हज़रत ईसा जवाब देंगे, हे अल्लाह तू पाक है, जिसका मुझे हक़ नही था वह बात मैं क्यों कर कह सकता था? जैसे कि सूर: अल-फ़ुरक़ान-१७ में भी बयान हुआ, कि क्या यह तुम्हारे कहने पर तुम्हारी इबादत करते थे ?

[2] ज़ालिमों से मुराद अल्लाह के सिवाय दूसरे के पुजारी हैं, क्योंकि शिर्क (द्वैत) बड़ा ज़ुल्म है और मुशरिक (मिश्रणवादी) सब से बड़े ज़ालिम।

यह तो खुला हुआ जादू है।

وَمَآ ءَاتَيْنَٰهُم مِّن كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِن نَّذِيرٍ ﴿44﴾

४४. और इन (मक्कावासियों को) न तो हम ने किताबें अता कर रखी हैं जिन्हें ये पढ़ते हों और न उन के पास आप से पहले कोई सतर्क (आगाह) करने वाला आया।

وَكَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَغُوا۟ مِعْشَارَ مَآ ءَاتَيْنَٰهُمْ فَكَذَّبُوا۟ رُسُلِى فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿45﴾

४५. और इन से पहले के लोगों ने भी हमारी बातों को झुठलाया था और उन्हें हम ने जो दे रखा था ये तो उस के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे, तो उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, (फिर देख) कि मेरे अजाब की क्या (कठोर) हालत हुई।[1]

قُلْ إِنَّمَآ أَعِظُكُم بِوَٰحِدَةٍ أَن تَقُومُوا۟ لِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُرَٰدَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا۟ مَا بِصَاحِبِكُم مِّن جِنَّةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُم بَيْنَ يَدَىْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿46﴾

४६. कह दीजिए कि मैं तुम्हें केवल एक ही बात की नसीहत करता हूँ कि तुम अल्लाह के लिए (ख़ालिस तौर से जिद को छोड़कर) दो-दो मिल कर या अकेले-अकेले खड़े होकर ख़्याल तो करो, तुम्हारे इस साथी को कोई जुनून नहीं। वह तो तुम्हें एक बड़े (कड़े) अजाब के आने से पहले आगाह करने वाला है।

قُلْ مَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدٌ ﴿47﴾

४७. कह दीजिए कि जो बदला मैं तुम से माँगू वह तुम्हारे लिये है,[2] मेरा बदला तो अल्लाह पर है, वह हर चीज को अच्छी तरह जानता है।

قُلْ إِنَّ رَبِّى يَقْذِفُ بِٱلْحَقِّ عَلَّٰمُ ٱلْغُيُوبِ ﴿48﴾

४८. कह दीजिए कि मेरा रब हक़ (सच्ची वह्यी) नाजिल करता है, वह हर छिपी बात (ग़ैब) का जानने वाला है।



---

[1] यह मक्का के मूर्तिपूजकों को बाख़बर किया जा रहा है कि तुम ने झुठलाने और इंकार का जो रास्ता अपनाया है वह बहुत नुक़सानदह है, तुम से पहले की उम्मत भी इसी रास्ते पर चलकर तबाह और बरबाद हुए हैं, जबकि यह उम्मत माल-दौलत, ताक़त-क़ूवत और उम्र में तुम से बढ़कर थे, तुम तो उन के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचते। इस के बावजूद वह अल्लाह के अजाब से नहीं बच सके, इस बारे में सूर: अहक़ाफ़ की आयत २६ में बयान किया गया है।

[2] इस में अपनी बेगरज़ी और दुनियावी धन-साधन से अरूचि (बेरग़बती) को जाहिर किया है ताकि उन के दिलों में अगर यह शक पैदा हो कि इस नबूअत के दावे से इसका मतलब कहीं मायामोह (दुनिया की तमन्ना) तो नहीं, तो वह दूर हो जाये।

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿49﴾

४९. कह दीजिए, सच आ चुका, झूठ न तो पहली बार उभरा न दोबारा उभर सकेगा ।[1]

قُلْ إِن ضَلَلْتُ فَإِنَّمَآ أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِى ۖ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِىٓ إِلَىَّ رَبِّىٓ ۚ إِنَّهُۥ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿50﴾

५०. कह दीजिए कि अगर मैं भटक जाऊँ तो मेरे भटकने (का भार) मुझ पर ही है और अगर मैं सच्चे रास्ते पर हूँ तो उस वह्यी के सबब जो मेरा रब मुझ पर करता है, वह बड़ा सुनने वाला बड़ा क़रीब है ।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ فَزِعُوا۟ فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا۟ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿51﴾

५१. और अगर आप (वह समय) देखें जबकि ये काफ़िर घबराये फिरेंगे, फिर निकल भागने की कोई हालत न होगी, और क़रीब की जगह से पकड़ लिये जायेंगे ।

وَقَالُوٓا۟ ءَامَنَّا بِهِۦ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍۭ بَعِيدٍ ﴿52﴾

५२. और उस वक़्त कहेंगे कि हम इस (क़ुरआन) पर ईमान लाये, लेकिन इतनी दूर जगह से (मतलूब चीज़) कैसे हाथ आ सकती है ।[2]

وَقَدْ كَفَرُوا۟ بِهِۦ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِن مَّكَانٍۭ بَعِيدٍ ﴿53﴾

५३. और इस से पहले तो उन्होंने इस से कुफ़्र किया था और दूर-दूर से बिना देखे ही फेंकते रहे ।

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ فِى شَكٍّ مُّرِيبٍۭ ﴿54﴾

५४. और उनकी इच्छाओं और उन के बीच पर्दा डाल दिया गया जैसेकि इस से पहले भी इन जैसों के साथ किया गया,[3] वे भी (इन्ही की तरह) शक और शुब्हा में (पड़े हुए) थे ।



---

[1] हक़ से मुराद क़ुरआन और बातिल (अनृत) से मुराद कुफ़्र (अविश्वास) और शिर्क (अनेकेश्वरवाद है) । मतलब है अल्लाह की तरफ़ से अल्लाह का दीन और उसकी किताब क़ुरआन आ गयी है, जिससे बातिल (असत्य) तंग और ख़त्म हो गया है, अब वह सर उठाने लायक़ नहीं रहा ।

[2] تَنَاوُش का मतलब पकड़ना है, अब आख़िरत में उन्हें ईमान किस तरह मिल सकता है जबकि दुनिया में उस से भागते रहे, मानो आख़रित ईमान के लिए दुनिया के मुक़ाबले दूर की जगह है, जैसे दूर की चीज़ को पकड़ना मुमकिन नहीं, आख़िरत में ईमान लाने का मौक़ा नहीं ।

[3] यानी पिछले समुदायों (उम्मतों) का ईमान भी उस वक़्त क़ुबूल नहीं किया गया जब वह अज़ाब को देखने के बाद ईमान लाये ।

# सूरतु फ़ातिर-३५

سُورَةُ فَاطِرٍ

सूर: फ़ातिर मक्का में नाज़िल हुई, इस में पैंतालीस आयतें और पांच रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. उस अल्लाह के लिए सारी तारीफ़ें हैं जो (सब से पहले) आकाशों और धरती का पैदा करने वाला[1] और दो-दो, तीन-तीन और चार-चार परों वाले फ़रिश्तों को अपना रसूल बनाने वाला है,[2] सृष्टि (मख़लूक़) में जो चाहे ज़्यादा करता है[3] अल्लाह (तआला) बेशक हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ①

२. अल्लाह (तआला) जो दया (रहमत) लोगों के लिए खोल दे तो उस का कोई बन्द करने वाला नहीं, और जिस को बन्द कर दे उस के बाद उस को कोई शुरू करने वाला नहीं, और वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②



[1] فاطر (फ़ातिर) का मतलब है खोज करने वाला, शुरू में पैदा करने वाला, यह अल्लाह की क़ुदरत की तरफ़ इशारा है कि उस ने आकाश और धरती सब से पहले बिना नमूने के बनाये तो उस के लिये दोबारा इन्सानों को पैदा करना कौन सा कठिन है?

[2] मुराद जिब्रील, मीकाईल, इस्राफ़ील और इज़्राईल फ़रिश्ते हैं जिनको अल्लाह रसूलों (अम्बिया) की तरफ़ या कई बहुत अहम कामों के लिए रसूल बनाकर भेजता है, इन में से किसी के दो, किसी के तीन और किसी के चार पंख हैं जिन के ज़रिये वह धरती पर आते और धरती से आकाश पर जाते हैं।

[3] यानी कुछ फ़रिश्तों के इस से भी ज़्यादा पंख हैं। जैसे कि हदीस में नबी ﷺ ने फ़रमाया मैंने मेराज की रात जिब्रील को उन की हक़ीक़ी शक्ल में देखा, उन के छ: सौ पर थे। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: नजम, बाबु फ़कान क़ाब कौसैने औ अदना) कुछ ने इसे आम रखा है, जिस में आंख, मुंह, नाक और रूप सब की ख़ूबसूरती शामिल है।

३. हे लोगो! तुम पर जो उपहार (नेमत) अल्लाह (तआला) ने किये हैं उन्हें याद करो। क्या अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा भी ख़ालिक है जो तुम्हें आकाश और धरती से रिज़्क़ पहुँचाये? उस के सिवाय कोई माबूद (पूज्य) नहीं तो तुम कहाँ उल्टे जाते हो?

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَتَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ خَٰلِقٍ غَيْرُ ٱللَّهِ يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ ۚ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ (3)

४. और अगर वे आप को झुठलायें तो आप से पहले के (सभी) रसूल भी झुठलाये जा चुके हैं, और सभी काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटाये जाते हैं।

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى ٱللَّهِ تُرْجَعُ ٱلْأُمُورُ (4)

५. हे लोगो! अल्लाह (तआला) का वादा सच्चा है, तुम्हें दुनियावी ज़िन्दगी धोखे में न डाले, और न धोखेबाज (छली शैतान) तुम्हें ग़फ़लत (निश्चिन्तता) में मशगूल (लिप्त) करे।[1]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِٱللَّهِ ٱلْغَرُورُ (5)

६. (याद रखो)! शैतान तुम्हारा दुश्मन है तुम उसे दुश्मन जानो, वह तो अपने गिरोह को केवल इसलिए बुलाता है कि वे सब जहन्नम में जाने वाले हो जायें।

إِنَّ ٱلشَّيْطَٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَٱتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُوا۟ حِزْبَهُۥ لِيَكُونُوا۟ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلسَّعِيرِ (6)

७. जो लोग काफ़िर हुए उन के लिए सख़्त सज़ा है, और जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये उन के लिए माफ़ी और (अति) अच्छा बदला है।[2]

ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ (7)



---

[1] उस के दाव और छल से बचकर रहो, इसलिए कि वह बड़ा धोखेबाज़ है, और उसका मक़सद ही तुम्हें धोखे में रखकर जन्नत से महरूम (वंचित) करना है, यही लफ़्ज़ सूर: लुक़मान ३३ में भी गुज़र चुके हैं।

[2] अल्लाह तआला ने दूसरी जगहों की तरह यहाँ भी ईमान के साथ नेकी के काम की चर्चा करके उस की अहमियत ज़ाहिर किया है ताकि ईमानवाले नेकी के काम से किसी पल बेफ़िक्र न रहें, क्योंकि बड़े बदले का वादा उस ईमान पर ही है जिस के साथ नेक काम होगा।

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿8﴾

८. क्या वह इंसान जिस के लिए उस के बुरे काम सुशोभित (मुज़य्यन) कर दिये गये हैं तो वह उन्हें अच्छा समझता है, (क्या वह हिदायत पाने वाले इंसान जैसा है?) (यक़ीन करो) अल्लाह जिसे चाहे भटका देता है और जिसे चाहे हिदायत देता है, तो आप को उन पर दुखी होकर अपनी जान को तकलीफ़ में न डालना चाहिये, ये जो कुछ कर रहे हैं उसे बेशक अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿9﴾

९. और अल्लाह ही हवायें चलाता है जो बादलों को उठाती हैं, फिर हम बादलों को सूखी धरती की तरफ़ ले जाते हैं और उस से उस धरती को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देते हैं। इसी तरह दोबारा ज़िन्दा होकर उठना (भी) है।[1]

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ﴿10﴾

१०. जो इंसान इज़्ज़त हासिल करना चाहता हो तो अल्लाह (तआला) के लिये ही सारी इज़्ज़त है। तमाम पाक कलिमे उसी की तरफ़ चढ़ते हैं, और नेक अमल उन को ऊँचा करता है, और जो लोग बुराई के दाँव-घात में लगे रहते हैं[2] उन के लिए बड़ा सख़्त अज़ाब है और उन का यह पाखण्ड (मकर) नाश हो जायेगा।



---

[1] यानी जिस तरह बारिश करके हम सूखी धरती को हरी कर देते हैं, इसी तरह क़यामत के दिन तमाम मुर्दा इन्सानों को भी हम ज़िन्दा कर देंगे। हदीस में आता है कि इंसान का पूरा शरीर (जिस्म) गल जाता है सिर्फ़ रीढ़ की हड्डी का एक छोटा हिस्सा महफ़ूज़ रहता है, इसी से उसकी दोबारा पैदाईश और तख़लीक़ (रचना) होगी। (सहीह बुख़ारी)

[2] छिपे तौर से किसी को नुक़सान पहुँचाने के तरीक़े को मक्र कहते हैं, कुफ़्र और शिर्क करना भी मक्र है कि इस तरह से अल्लाह के रास्ते को नुक़सान पहुँचाया जाता है, नबी ﷺ के क़त्ल की जो योजना (प्लान) मक्का के काफ़िर करते रहे वह भी मक्र है, पाखंड (दिखावा) भी मक्र है यह लफ़्ज़ आम है, मक्र के सभी रूपों को शामिल है।

११. (लोगो!) अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से फिर वीर्य (मनी) से पैदा किया,[1] फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े (नर-नारी) बना दिया है, नारियों का गर्भ धारण (हामिला) करना और बच्चे का जन्म लेना सभी उस के इल्म में है, और जो लम्बी उम्र वाली उम्र दी जाये और जिस किसी की उम्र घटे वह सब किताब में मौजूद है। अल्लाह (महान) पर यह बात बड़ी आसान है।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ۭ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۭ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ⑪

१२. और बराबर नहीं दो समुद्र। यह मीठा है प्यास बुझाता है पीने में अच्छा, और वह दूसरा खारी है कड़ुवा, तुम इन दोनों से ताज़ा गोश्त खाते हो और वह गहने निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो, और तुम देखते हो कि बड़ी-बड़ी नवकायें जल को चीरने-फाड़ने वाली[2] उन समुद्रों में हैं ताकि तुम उसकी कृपा (फ़ज़्ल) की खोज करो और ताकि तुम उसका शुक्रिया अदा करो।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ڰ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَاۗىِٕغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۭ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ⑫

१३. वह रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल कराता है, और सूरज और चाँद को उसी ने काम में लगा दिया है, हर एक मुक़र्रर मुद्दत तक चल रहे हैं। यही है अल्लाह तुम सबका रब, इसी का मुल्क है और जिन्हें तुम उस के सिवाय पुकार रहे हो वह तो खजूर की गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं।[3]

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ڮ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۭ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ⑬



---

[1] यानी तुम्हारे पिता आदम को मिट्टी से फिर इस के बाद तुम्हारी जाति (वंशधारा) को बाक़ी रखने के लिए इन्सान की पैदाईश को वीर्य से सम्बन्धित (मुतअल्लिक़) कर दिया, जो मर्द की पीठ से निकल कर औरत के गर्भाशय (रिहम) में जाता है।

[2] مواخر (मवाख़िर) वह नवकायें जो आते-जाते पानी को चीरते गुज़रती हैं। आयत में बयान दूसरे विषयों का बयान सूर: अल-फ़ुरक़ान में गुज़र चुका है।

[3] यानी इतनी हक़ीर चीज़ के भी मालिक नहीं, न उसे पैदा करने पर क़ुदरत रखते है। قِطْمِيْرٌ (क़ितमीर) उस झिल्ली को कहते हैं जो खजूर और उस के बीज के बीच होती है, यह पतला सा छिलका गुठली पर लिफ़ाफ़ा (वेष्टन) की तरह चढ़ा रहता है।

إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿14﴾

१४. अगर तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं[1] और अगर (मान लिया कि) सुन भी लें तो क़ुबूल नहीं करेंगे, बल्कि क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क का साफ़ नकार देंगे ।[2] और आप को कोई भी (अल्लाह तआला) जैसा जानकार ख़बरें न देगा ।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿15﴾

१५. हे लोगो! तुम अल्लाह के भिखारी हो और अल्लाह ही बेनियाज़ तारीफ़ वाला है ।

إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿16﴾

१६. अगर वह चाहे तो तुम को बरबाद कर दे और एक नयी मख़लूक़ पैदा कर दे ।

وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿17﴾

१७. और यह बात अल्लाह (तआला) के लिए कुछ कठिन नहीं ।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَإِن تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَن تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿18﴾

१८. और कोई भी बोझ उठाने वाला दूसरों का बोझ नही उठायेगा, और अगर कोई भारी बोझ वाला अपना भार उठाने के लिए किसी दूसरे को बुलायेगा तो वह उसमें से कुछ भी न उठा सकेगा चाहे क़रीबी रिश्तेदार ही हो, तू सिर्फ़ उन्हीं को आगाह कर सकता है जो बिन देखे ही अपने रब से डरते हैं और नमाज़ नियमित रूप से पढ़ते हैं, और जो पाक हो जाये वह अपने ही फ़ायदे के लिए पाक होगा, और लौटना अल्लाह ही की तरफ़ है ।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿19﴾

१९. और अंधा और आँखों वाला बराबर नहीं ।



---

[1] यानी अगर तुम उन्हें कठिनाईयों में पुकारो तो वह तुम्हारी गुहार सुनते ही नहीं हैं, क्योंकि वह जड़ हैं या मनों मिट्टी के नीचे गड़े हुए ।

[2] इस आयत से यह भी मालूम होता है कि अल्लाह के सिवाय जिन की इबादत की जाती है वह सब पत्थर की मूर्तियाँ ही नहीं होंगी बल्कि उन में समझ वाले (फ़रिश्ते, जिन्न, शैतान और नेक लोग) भी होंगे, तब ही तो वे इंकार करेंगे, और यह भी मालूम हुआ कि उन्हें ज़रूरत के पूरा करने के लिए पुकारना शिर्क है ।

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ۙ (20)

२०. और न अंधेरे और न रौशनी।

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ۚ (21)

२१. और न छाया और न धूप।

وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ (22)

२२. और जिन्दा व मुर्दा बराबर नहीं हो सकते, और अल्लाह (तआला) जिस को चाहता है सुनवा देता है, और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं।[1]

اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ (23)

२३. आप तो केवल डराने वाले हैं।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۭ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ (24)

२४. हम ने ही आप को हक़ देकर ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, और कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई जिस में कोई डराने वाला न गुज़रा हो।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ (25)

२५. और अगर ये लोग आप को झुठला दें तो जो लोग इनसे पहले गुज़रे हैं उन्होंने भी झुठलाया था, उन के पास भी उन के पैग़म्बर मोजिज़े, सहीफ़े और वाज़ेह किताबें लेकर आये थे।

ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ (26)

२६. फिर मैंने उन काफ़िरों को पकड़ लिया तो मेरा अज़ाब कैसा हुआ।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ۭ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ (27)

२७. क्या आप ने इस बात की तरफ़ ध्यान नहीं दिया कि अल्लाह (तआला) ने आकाश से पानी उतारा फिर हम ने उस के ज़रिये कई रंगों के फल निकाले,[2] और पहाड़ों के कई हिस्से हैं,

---

[1] यानी जिस तरह समाधियों (क़ब्रों) में मुर्दा लोगों को कोई बात सुनाई नहीं जा सकती, इसी तरह जिन के दिलों को कुफ़्र ने मुर्दा कर दिया है, हे रसूल! (ﷺ) तू उन्हें हक़ की बात नहीं सुना सकता। मतलब यह हुआ कि जिस तरह मरने और गड़ने के बाद मुर्दा कोई फ़ायेदा नहीं उठा सकता, इसी तरह काफ़िर और मुश्रिक जिन के नसीब में बदनसीबी लिखी है, दावत और सच बात से उन्हें फ़ायेदा नहीं होता।

[2] यानी जिस तरह ईमानदार और काफ़िर, नेक लोग और बुरे लोग दोनों तरह के लोग हैं, इसी तरह दूसरे मख़लूक़ में भी क़िस्म और नौईयत है। मिसाल के तौर पर फलों के रंग भी कई हैं, मज़ा और ख़ुश्बू में भी आपस में मुख़्तलिफ़, यहाँ तक कि एक ही फल के भी कई-कई रंग और मज़े हैं, जैसे खजूर है, अंगूर है, सेब है और दूसरे कुछ फल हैं।

सफेद और लाल कि उन के भी रँग कई है और बहुत गहरे काले।

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿28﴾

२८. और इसी तरह इंसानों और जानवरों और चौपायों में भी कुछ ऐसे हैं कि उन के रंग अलग-अलग हैं, अल्लाह से उस के वही बंदे डरते हैं जो इल्म रखते हैं। हक़ीक़त (वास्तव) में अल्लाह (तआला) बहुत बड़ा माफ़ करने वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ۙ ﴿29﴾

२९. जो लोग अल्लाह की किताब का पाठ (तिलावत) करते है और नमाज़ नियमित रूप (पाबन्दी) से पढ़ते हैं,[1] और जो कुछ हम ने उन्हें अता (प्रदान) किया है उस में से छिपे और खुले तौर से ख़र्च करते हैं, वे ऐसे कारोबार के उम्मीदवार हैं जो कभी भी नुक़सान (हनि) में न होगा।

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿30﴾

३०. ताकि उन के बदले पूरी तरह से उन को दे और उन को अपनी कृपा (फ़ज़्ल) से और ज़्यादा अता करे। बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला क़द्रदान है।

وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿31﴾

३१. और यह किताब जो हम ने आप के पास वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा (ज़रिये) भेजी है यह पूरी तरह से सच है जो अपने से पहले की किताबों की भी पुष्टि (तसदीक़) करती है। बेशक अल्लाह (तआला) अपने बंदों की पूरी जानकारी रखने वाला अच्छी तरह देखने वाला है।



---

[1] नमाज़ के क़ायम करने से मुराद होता है नमाज़ उस ढंग से पढ़ना जो मतलूब (उसका मक़सद) है, यानी मुक़र्रर (निर्धारित) वक़्त और उसके वाजिबात, अरकान, ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ के साथ पढ़ना।

३२. फिर (इस) किताब[1] का वारिस हम ने उन लोगों को बनाया जिन को हम ने अपने बन्दों में से चुन लिया। फिर कुछ तो अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं[2] और कुछ औसत दर्जे के हैं और कुछ उन में से अल्लाह की तौफ़ीक़ से नेकी में तरक्क़ी करते चले जाते हैं, यह बड़ी कृपा (फ़ज़्ल) है।

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرٰتِ بِإِذْنِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿32﴾

३३. हमेशा रहने के वे बाग़ हैं जिन में ये लोग प्रवेश (दाख़िल) करेंगे, उस में वे सोने के कंगन और मोती पहनाये जायेंगे और कपड़े वहाँ उन के रेशम के होंगे।[3]

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿33﴾

३४. और कहेंगे कि अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है जिस ने हम से ग़म दूर किया। बेशक हमारा रब बड़ा माफ़ करने वाला और क़दर करने वाला है।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿34﴾

३५. जिसने हमें अपनी कृपा (फ़ज़्ल) से हमेशा रहने वाली जगह में ला उतारा, जहाँ न हम को कोई कठिनाई पहुँचेगी और न हम को कोई थकान पहुँचेगी।

الَّذِيْ أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿35﴾

३६. और जो लोग काफ़िर हैं उन के लिए नरक की आग है, न तो उनकी मौत ही आयेगी कि मर ही जायें और न नरक की सज़ा ही उन से कम की जायेगी। हम हर काफ़िर को ऐसी ही

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿36﴾



[1] किताब से मुराद पाक क़ुरआन और चुने हुए बन्दों से मोहम्मद ﷺ की उम्मत है, यानी हम ने इस क़ुरआन का वारिस मोहम्मद ﷺ के पैरोकारों को बनाया है।

[2] मोहम्मद ﷺ के पैरोकारों के तीन क़िस्में बताई गई हैं, यह पहली क़िस्म है, जिस से मुराद ऐसे लोग हैं जो कुछ फ़राईज़ में सुस्ती और कुछ हराम काम कर लेते हैं, या कुछ के यहाँ मुराद वे हैं जो छोटी-छोटी ग़ल्तियाँ कर जाते हैं, उन्हें अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाला इसलिए कहा कि वह अपने कुछ सुस्ती के सबब ख़ुद को उस ऊँचे पद से महरूम कर लेंगे जो बाक़ी दो क़िस्मों को हासिल होंगे।

[3] हदीस में आता है कि रेशम और दीबाज दुनिया में न पहनो, इसलिए कि जो इसे दुनिया में पहनेगा वह उसे आख़िरत (परलोक) में नहीं पहनेगा। (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम, किताबुल लिबास)

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا ۚ رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَٰلِحًا غَيْرَ ٱلَّذِى كُنَّا نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ ٱلنَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا۟ فَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِن نَّصِيرٍ (37)

यातना देते हैं।

३७. और वे लोग उस में चिल्लायेंगे कि हमारे रब! हम को निकाल ले हम अच्छे अमल करेंगे उन आमाल के अलावा जो किया करते थे। (अल्लाह तआला कहेगा) कि क्या हम ने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि जिस को समझना होता[1] वह समझ सकता और तुम्हारे पास डराने वाला भी पहुँचा था[2] तो मजा चखो कि (ऐसे) जालिमों का कोई मदद करने वाला नहीं है।

إِنَّ ٱللَّهَ عَٰلِمُ غَيْبِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ إِنَّهُۥ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ (38)

३८. बेशक अल्लाह (तआला) जानने वाला है आकाशों और धरती की छिपी चीजों का, बेशक वही जानने वाला है सीनों की बातों का।

هُوَ ٱلَّذِى جَعَلَكُمْ خَلَٰٓئِفَ فِى ٱلْأَرْضِ ۚ فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُۥ ۖ وَلَا يَزِيدُ ٱلْكَٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ ٱلْكَٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا (39)

३९. वही ऐसा है जिस ने तुम्हें धरती पर बसाया, तो जो इंसान कुफ़्र (इंकार) करेगा उस के कुफ़्र का बोझ उसी पर पड़ेगा, और काफ़िरों के लिए उन का कुफ़्र उन के रब के क़रीब क्रोध ही बढ़ने की वजह बनता है, और काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र नुक़सान ही को बढ़ाने का सबब होता है।



[1] इस से मुराद कितनी उम्र है? भाष्यका ं (मुफ़स्सिरों) ने अलग-अलग उम्र का बयान किया है। कुछ ने कुछ हदीसों से दलील देते हुए कहा है कि ६० साल की उम्र मुराद है। (इब्ने कसीर) लेकिन हमारे ख़्याल से उम्र का त [illegible]न सही नहीं है, इसलिए कि उम्र कई होती है, कोई जवानी में, कोई अधेड़ उम्र में और को[illegible] वुढ़ापे में मरता है, फिर यह समय भी गुज़रे पल की तरह कम नहीं होते वल्कि हर मुद्दत ख़ा[illegible] तौर से लम्बी होती है। मिसाल के तौर पर जवानी का ज़माना व्यस्क (बालिग) होने से अ[illegible]ड़ [illegible]ने तक और अधेड़ होने का समय वुढ़ापे तक और वुढ़ापे का मौत तक रहता है। वि[illegible] सोच-विचार, नसीहत हासिल करने और प्रभावित (मुतास्सिर) होने के लिए कुछ साल, [illegible]सी को उस से ज़्यादा और किसी को इस से भी ज़्यादा वक़्त मिलता है, और सब से यह स[illegible] कहना सही होगा कि हम ने तुझे इतनी उम्र दी फिर तूने सच (हक़) को समझने और उसे [illegible] करने की कोशिश क्यों नहीं की?

[2] इस से मुराद आख़िरी रसूल मोहम्मद ﷺ

قُلْ أَرَءَيْتُمْ شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِن يَعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُم بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا (40)

४०. (आप) कहिए कि तुम अपने (मुकर्रर किये हुए) साझीदारों का हाल तो बताओ जिन को तुम अल्लाह के सिवाय पुकारा करते हो, यानी मुझ को यह बताओ कि उन्होंने धरती का कौन-सा (हिस्सा) बनाया है या उनका आकाश में कुछ साझा है, या हम ने उन को कोई किताब दी है कि यह उस के सबूत पर मजबूत हों, वल्कि यह ज़ालिम एक-दूसरे से केवल धोखे की बातों का वादा करते आते हैं।

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ أَن تَزُولَا ۚ وَلَئِن زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّن بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا (41)

४१. यक़ीनी बात है कि अल्लाह (तआला) आकाशों और धरती को थामे हुए है कि वह टल न जायें और अगर वह टल जायें तो फिर अल्लाह के अलावा कोई उनको थाम भी नहीं सकता। वह बड़ा सहनशील माफ़ करने वाला है।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا (42)

४२. और इन काफ़िरों ने बड़ी पक्की क़सम खायी थी कि अगर उन के पास कोई डराने वाला आया तो वह हर उम्मत से ज़्यादा हिदायत हासिल करने वाले बनेंगे।[1] फिर जब उन के पास एक पैग़म्बर आ पहुँचा तो उनकी नफ़रत में ही प्रगति (तरक़्क़ी) हुई।

اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ فَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا (43)

४३. दुनिया में अपने को बड़ा समझने के कारण और उन के बुरे प्रयत्नों (तदबीरों) के कारण, और बुरी तदबीर करने वालों की सज़ा उन तदबीर करने वालों को ही भुगतना पड़ता है, तो क्या ये उसी सुन्नत के इंतेज़ार में हैं जो पहले के लोगों के साथ होती रही है, तो आप

[1] इस में अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि मोहम्मद ﷺ के नबी बनाकर भेजे जाने से पहले यह मूर्तियों के पुजारी क़समें खा खाकर कह रहे थे कि अगर हमारी तरफ़ कोई नबी आया तो हम उसका स्वागत (इस्तक़बाल) करेंगे और उस पर ईमान लाने में एक नमूना (आदर्श) पेश करेंगे। यह विषय दूसरी जगहों पर भी बयान है, जैसे सूर: अंआम-१५६, १५७ और सूर: अस्साफ़्फ़ात-१६७-१७०।

अल्लाह की रीति में कभी बदलाव नहीं पायेंगे, और आप अल्लाह की रीति को कभी तबदील होती हुई न पायेंगे।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِن شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا (44)

४४. क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं जिस में वह देखते-भालते कि जो लोग उन से पहले गुज़रे हैं उनका नतीजा क्या हुआ, यद्यपि (अगरचे) ताक़त में वे लोग इन से ज़्यादा थे, और अल्लाह ऐसा नहीं है कि कोई चीज उसे हरा दे न आकाशों में और न धरती में, वह बड़ा इल्म (ज्ञान) वाला क़ुदरत वाला है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا (45)

४५. और अगर अल्लाह (तआला) लोगों को उन के अमल की वजह से तुरन्त पकड़ने लगता तो सारी धरती पर एक जान भी न छोड़ता,[1] लेकिन अल्लाह (तआला) उनको एक नियमित (महदूद) समय तक मौक़ा दे रहा है, तो जब उनका समय आ पहुँचेगा तो अल्लाह (तआला) अपने बन्दों को ख़ुद देख लेगा।

## सूरतु यासीन-३६

سُورَةُ يسٓ

सूर: यासीन* मक्का में नाज़िल हुई, इस में तिरासी आयतें और पाँच रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

---

[1] इन्सानों को तो उन के पापों के बदले और जानवरों को इन्सानों के साथ रहने के सबब, या मतलब यह है कि सारी दुनिया वालों को नाश कर देता, इन्सानों को भी और जिन जानवरों और रोज़ी के वे मालिक हैं, उनको भी, या मतलब यह है कि आकाश से वर्षा का क्रम (सिलसिला) बन्द कर देता जिससे धरती पर चलने वाले सभी जानदार मर जाते।

* सूर: यासीन की विशेषता (फ़ज़ीलत) में बहुत सी रवायतें प्रसिद्ध (मशहूर) हैं। इन्हीं में जैसे, यह क़ुरआन का दिल है, इसे उस पर पढ़ो जो मौत के क़रीब हो, इत्यादि (वग़ैरह)। लेकिन बयान क्रम (सनद) के आधार पर कोई सही नहीं, कुछ पूरी तरह बनावटी हैं या कुछ कमज़ोर हैं। "क़ुरआन के दिल" वाली रिवायत (बयान) को हदीस के आलिम अलबानी ने बनावटी (गढ़ी हुई) कहा है। (अद-दईफ़ा हदीस नम्बर १६९)

يسٓ (1)

१. यासीन ।[1]

وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ (2)

२. क़सम है हिक्मत वाले (और मज़बूत) क़ुरआन की ।

إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ (3)

३. कि यक़ीनन आप पैग़म्बरों में से हैं ।[2]

عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ (4)

४. सीधे रास्ते पर हैं ।

تَنزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ (5)

५. (यह क़ुरआन अल्लाह) ज़बरदस्त बड़े रहम करने वाले की तरफ़ से नाज़िल किया गया है ।

لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ (6)

६. ताकि आप ऐसे लोगों को आगाह करें जिन के बाप-दादा नहीं डराये गये थे, तो (उसी सबब से) ये लोग ग़ाफ़िल हैं ।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ (7)

७. उन में से ज़्यादातर लोगों पर (यह) बात साबित हो चुकी है, अत: ये लोग ईमान नहीं लायेंगे ।[3]



---

[1] कुछ ने इसका मतलब 'हे इंसान' या हे मानव किया है, कुछ ने इसे नबी ﷺ का अच्छे नाम और कुछ ने उसे अल्लाह के अच्छे नामों में से बताया है, लेकिन यह सभी क़ौल बिना दलील के (अप्रमाणित) हैं । यह भी उन हरूफ़े मुक़त्तआत (विभिन्न अक्षरों) में ही से है जिसका मतलब और मानी अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता ।

[2] मुश्रेकीन (मूर्तिपूजक) नबी ﷺ की रिसालत (आप के रसूल होने) का इंकार करते थे और कहते थे कि (لَسْتَ مُرْسَلًا) (अर्रअद-४३) "तू तो अल्लाह की तरफ़ से रसूल ही नहीं है" अल्लाह ने उन के जवाब में पाक क़ुरआन की क़सम लेकर फ़रमाया : "आप बेशक उस के पैग़म्बरों में से हैं ।" इस में आप ﷺ की इज़्ज़त और अज़मत का इज़हार है, यह भी आप के सिफ़्तों और फ़ज़ीलतों में से है कि अल्लाह ने आप ﷺ की रिसालत को साबित करने के लिए क़सम खाई ﷺ।

[3] जैसे अबू जेहल, अबू लहब, उतबा और शैबा वग़ैरह । बात साबित होने का मतलब अल्लाह तआला का यह वादा है कि "मैं नरक को जिन्नों और इन्सानों से भर दूँगा ।" (अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰अस्सज्दा-१३) शैतान को भी सम्बोधित (मुख़ातिब) करते हुए अल्लाह ने फ़रमाया था : "मैं नरक को तुझ से और तेरे अनुगामियों (मानने वालों) से भर दूँगा ।" (साद-८४) यानी इन लोगों ने शैतान के पीछे लगकर ख़ुद को नरक का पात्र बना लिया, अल्लाह ने तो उन्हें इच्छा का अधिकार (हक़) और आज़ादी दी थी, उन्होंने इस का ग़लत इस्तेमाल किया और यूँ नरक का ईंधन बन गये यह नहीं कि अल्लाह ने बलपूर्वक उन को ईमान से वंचित (महरूम) रखा क्योंकि मजबूर करने की हालत में तो वह सज़ा के हक़दार ही न हो पाते ।

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُم مُّقْمَحُونَ ﴿8﴾

८. हम ने उनकी गर्दनों में तौक डाल दिये हैं फिर वह ठुड्डियों तक हैं, जिससे उन के सिर ऊपर की तरफ़ उलट गये हैं।

وَجَعَلْنَا مِن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿9﴾

९. और हम ने एक आड़ उन के सामने कर दी और एक आड़ उन के पीछे कर दी, जिस से हमने उनको ढांक दिया तो वे नहीं देख सकते।

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿10﴾

१०. और उन के बारे में आप का डराना या न डराना दोनों बराबर है, ये ईमान नहीं लायेंगे।[1]

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ ۖ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ﴿11﴾

११. बस आप तो केवल ऐसे इंसान को डरा सकते हैं जो नसीहत पर चले और रहमान (अल्लाह) से बिन देखे डरे, तो आप उसको माफ़ और अच्छे प्रतिदान (अज्र) की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿12﴾

१२. बेशक हम मुर्दों को जिन्दा करेंगे,[2] और हम लिखते जाते हैं वे अमल भी जिनको लोग आगे भेजते हैं[3] और उन के वह अमल भी जिन को पीछे छोड़ जाते हैं, और हर बात को हमने एक खुली किताब में संकलन (ज़ब्त) कर रखा है।[4]

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿13﴾

१३. और आप उन के सामने एक मिसाल (यानी एक) बस्ती वालों की कहानी (उस समय की) बयान कीजिए, जबकि उस बस्ती में कई रसूल आये।



[1] जो अपने करतूतों की वजह से गुमराही के उस जगह पर पहुँच जायें, उनको होशियार करना बेकार होता है।

[2] यानी क़यामत के दिन। यहाँ मुर्दों को जिन्दा करने की चर्चा से यह इशारा करना मक़सद है कि अल्लाह तआला काफ़िरों में जिस का दिल चाहता है जिन्दा कर देता है जो कुफ़्र और गुमराह होने के सबब मुर्दा हो चुके होते हैं, फिर वह हिदायत और ईमान को अपना लेते हैं।

[3] مَا قَدَّمُوا से वह अमल मुराद है जो इंसान अपने जीवन में करता है और آثَارَهُم से वह अमल जिन के अमली नमूने (अच्छे व बुरे) वह दुनिया में छोड़ जाता है और उस की मौत के बाद उस की पैरवी में लोग वे अमल करते हैं।

[4] इस से मुराद लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) है और कुछ ने आमालनामा मुराद लिया है।

إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ ٱثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوٓا۟ إِنَّآ إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ﴿14﴾

१४. जबकि हम ने उन के पास दो को भेजा, तो उन लोगों ने (पहले) उन दोनों को झुठलाया फिर हम ने तीसरे से समर्थन (ताईद) दिया तो उन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गये हैं।[1]

قَالُوا۟ مَآ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَآ أَنزَلَ ٱلرَّحْمَٰنُ مِن شَىْءٍ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ﴿15﴾

१५. उन लोगों ने कहा कि तुम तो हमारी तरह साधारण (आम) इंसान हो, और रहमान (दयालु) ने कोई चीज नाज़िल नहीं की, तुम तो केवल झूठ बोलते हो।

قَالُوا۟ رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّآ إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ﴿16﴾

१६. उन रसूलों ने कहा कि हमारा रब जानता है कि बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गये हैं।

وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا ٱلْبَلَٰغُ ٱلْمُبِينُ ﴿17﴾

१७. और हमारा फ़र्ज़ तो केवल वाज़ेह तौर से पहुँचा देना है।

قَالُوٓا۟ إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِن لَّمْ تَنتَهُوا۟ لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿18﴾

१८. उन्होंने कहा कि हम तो तुम्हें अशुभ समझते हैं, अगर तुम न रूके तो हम तुम्हें पत्थरों से मार कर तुम्हारा काम ख़त्म कर देंगे और तुम को हमारी तरफ़ से कड़ा अज़ाब पहुँचेगा।

قَالُوا۟ طَٰٓئِرُكُم مَّعَكُمْ أَئِن ذُكِّرْتُم بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿19﴾

१९. उन (रसूलों) ने कहा कि तुम्हारी नहूसत तो तुम्हारे साथ ही लगी हुई है, क्या उसको (अशुभ समझते हो) कि तुम को शिक्षा दी जाये, बल्कि तुम तो हद से तजावुज़ करने वाले हो।

وَجَآءَ مِنْ أَقْصَا ٱلْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱتَّبِعُوا۟ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿20﴾

२०. और एक इंसान उस नगर के आख़िरी छोर से दौड़ता हुआ आया, कहने लगा कि हे मेरी क़ौम (समुदाय) के लोगो! इन रसूलों (संदेष्टाओं) के रास्ते पर चलो।[2]

[1] यह तीन रसूल कौन थे? भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) ने उन के कई नाम बयान किये हैं, लेकिन नाम सहीह सनद से साबित नहीं हैं। कुछ मुफ़स्सिरों का ख़्याल है कि यह पैग़म्बर ईसा के भेजे हुए दूत थे जो उन्होंने अल्लाह के हुक्म से एक बस्ती में दीन की दावत-तबलीग़ के लिए भेजे थे, बस्ती का नाम अंताकिया था।

[2] यह इंसान मुसलमान था, जब उसे पता चला कि जाति पैग़म्बरों की दावत को नही अपना रही है तो उस ने आकर रसूलों का पक्ष लिया और उन की इत्तेबा पर प्रोत्साहित (आमादा) किया।

اتَّبِعُوا مَن لَّا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُم مُّهْتَدُونَ (21)

२१. ऐसे लोगों के रास्ते पर चलो जो तुम से कोई बदला नहीं माँगते और वे सच्चे रास्ते पर हैं।

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ (22)

२२. और मुझे क्या हो गया है कि मैं उसकी इबादत न करूँ, जिस ने मुझे पैदा किया और तुम सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

أَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِ آلِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنقِذُونِ (23)

२३. क्या मैं उसे छोड़ ऐसों को माबूद बना लूँ कि अगर (अल्लाह) दयालु (रहमान) मुझे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे, तो उनकी सिफ़ारिश मुझे कुछ भी फ़ायेदा न पहुँचा सके और न वह मुझे बचा सकें।[1]

إِنِّي إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (24)

२४. फिर तो मैं निश्चय (यक़ीनी) खुली गुमराही में हूँ।

إِنِّي آمَنتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ (25)

२५. मेरी सुनो! मैं तो (साफ़ दिल से) तुम सब के रब पर ईमान ला चुका।

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۖ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ (26)

२६. (उससे) कहा गया कि जन्नत में चला जा, कहने लगा, काश कि मेरी जाति को भी ज्ञान (इल्म) हो जाता।

بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ (27)

२७. कि मुझे मेरे रब ने माफ़ कर दिया और मुझे इज़्ज़तदार इंसानों में से कर दिया।[2]



---

[1] यह उन झूठे माबूदों की मजबूरी का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) है, जिनकी पूजा उसकी जाति करती थी और शिर्क की इस गुमराही से निकालने के लिए रसूल उनकी तरफ़ भेजे गये थे। "न बचा सकें" का मतलब है कि अगर अल्लाह मुझे नुक़सान वाला करना चाहे तो यह बचा नहीं सकते।

[2] यानी जिस ईमान और तौहीद की वजह से मुझे रब ने माफ़ कर दिया, काश मेरी जाति इस बात को जान ले ताकि वे भी ईमान और तौहीद (अद्वैतवाद) को अपनाकर अल्लाह की क्षमा और उसकी नेमतों के पात्र (मुसतहिक़) हो जाये। इस तरह वह मरने के बाद भी अपनी जाति का ख़ैरख़्वाह रहा। एक सच्चे मोमिन को ऐसा ही होना चाहिए कि वह हर पल लोगों का भला करे, उनको सही हिदायत दे गुमराह न करे, लोग उसे जो चाहें कहें और जैसा व्यवहार (सुलूक) चाहें करें यहाँ तक कि उसे मार डालें।